ऑनलाइन डिजिटल मासिक बाल पत्रिका

पायस

मार्च, 2021

होली है!

- जंगल में फाग
- विदेशों में होली
- ठहरा हुआ पानी
- दुनिया में सब समान हैं

ऑनलाइन डिजिटल मासिक बाल पत्रिका
पायस
मार्च 2021
वर्ष : 1, अंक : 3

इस अंक की रचनाएं

कहानियां

मधु गोयल : बुरा न मानो होली है 6, मंजरी शुक्ला : निबलू की होली 11, अनिल जायसवाल : रंग होली के 14, अरुण कुमार यादव : अनूठी सोच बच्चों की 16, भगवत प्रसाद पाण्डेय : ठहरा हुआ पानी 22, अर्चना त्यागी : गांव की होली 26, संगीता सेठी : स्पन्दन या छोटा भीम, मनोहर चमोली 'मनु' : और वे लौट आईं 30, डॉ. सुधा गुप्ता 'अमृता' : ईलू नगर की इल्लियां 34, गिरिजा कुलश्रेष्ठ : कजरी गई कहां 40, तारा दत्त जोशी : होली का उपहार 42, तरुण कुमार दाधीच : उड़ने वाला गुब्बारा 46

कविताएं

डॉ. गोपाल राजगोपाल : बेईमानी मत कर 21,
अंजना गर्ग : रंग भरी होली 25, डॉ. सुधा गुप्ता 'अमृता' : मल दिया गुलाल 31, हर प्रसाद रोशन : एक बनाते 32,
महेंद्र कुमार वर्मा : मिलकर खाओ 32
डॉ. कृष्णा कुमारी : जंगल में फाग 33
प्रमोद सोनवानी पुष्प : आई रे होली 33

जानकारी

भारत में होली 4, विदेशों में होली 8,
दुनिया में सब समान हैं 18,
ओमप्रकाश क्षत्रिय 'प्रकाश' : कॉन्टेक्ट लैंस की कहानी 24
आइवर यूशिएल : समुद्र की सतह पर तैरती ह्वेल फुहारा क्यों छोड़ती है ? 39
आदिवासी संग्रहालय : 44

विविध

चित्रकथा : गोलू की होली 17, डब्बू की चतुराई 36
जरा सोचो 48,
खबरें इंटरनेट से...58,
पुस्तक परिचय : 60,
हंसना जरूरी है 61,
खेल : टेस्ट क्रिकेट 62,
धन्यवाद ज्ञापन 63, अपील 64

बाल मंच

पेंटिंग : अनुभव चमोली, मयूर मिश्रा, आन्या, शताक्षी, अर्पणा गर्ग, अतिक्ष जैन, सात्विक यादव, तानिया कौशिक, स्नेहा चोखडा, अफ्फान, श्रृतुजा यादव, आंचल 50-53,
कविताएं : रसलीन कौर, दिया शर्मा, मानसी कदम, यातुशी इंदुरत्न 54-56
डायरी : आन्या 54,
मेरे कैमरे से... : 56,
राइजिंग स्टार : एंजेल गांधी 57

होली पर कोरोना को न भूलना

मार्च का महीना एक काफी महत्वपूर्ण महीना है। ना सिर्फ सरकार और कामकाजी लोग, बल्कि बच्चों के लिए भी। इसे ईयर एंडिंग मंथ भी कहते हैं।

जब हम फाइनेंसियल ईयर की बात करते हैं, तो इसकी शुरुआत अप्रैल से होती हैं और समापन मार्च के महीने में। अकाउंट्स और सेल से जुड़े लोग इस महीने में बहुत व्यस्त होते हैं। उन्हें अपने टारगेट पूरे करने होते हैं। और यही बच्चों के साथ भी होता है। तुम्हारा टारगेट भी मार्च के महीने में ही पूरा होता है अर्थात नई क्लास में जाने का टारगेट, मार्च में ही परीक्षा और मार्च के अंत में आने वाला रिजल्ट।

इस मार्च महीने की शुरुआत 'जीरो टोलरेंस डे' यानी 'शून्य भेदभाव दिवस' से हो रही है और इसके एक हफ्ते बाद 8 मार्च को 'महिला दिवस' है। इस बार दोनों दिन महिलाओं से जुड़े हैं और हमें सोचने को मजबूर करते हैं कि इस खूबसूरत दुनिया में आज भी हम महिलाओं से इतना भेदभाव करते हैं कि उन्हें भेदभाव से बचाने के लिए और उनके प्रति प्यार प्रदर्शित करने के लिए कुछ खास दिन मनाते हैं। मेरा तो सपना है कि आने वाले समय में तुम बच्चे इस दुनिया से जेंडर डिस्क्रिमिनेशन को खत्म कर दोगे और फिर हमें एक खास दिन पर एक खास जेंडर की बात करने की जरूरत नहीं पड़ेगी।

सोचो, हम कितने बेमन से भेदभाव की दूरियों को मिटाते हैं। गांधी जी ने आज से 125 साल पहले दक्षिण अफ्रीका में भेदभाव के प्रति आंदोलन चलाया था और आज 21वीं सदी में भी हमें इस बारे में बातें करनी पड़ रही हैं।

इस बार का मार्च बहुत महत्वपूर्ण है। कोरोना के साए से दुनिया निकल रही है, पर यह नए-नए रूप धरकर इनसान की जिंदगी को प्रभावित करने में कोई कोर-कसर नहीं छोड़ रहा। भारत सहित कई देश कोरोना वैक्सिन बना चुके हैं और टीकाकरण भी आरंभ हो चुका है। तुम बच्चों का दायित्व है कि अफवाहों पर ध्यान न देकर अपने घर के बड़े बुजुर्गों को वैक्सिन लेने के लिए तैयार करो, क्योंकि कुछ ना होने से कुछ होना ज्यादा अच्छा होता है।

भूल से भी होली के चक्कर में कोरोना का ध्यान मत छोड़ देना। जो सुरक्षा उपाय हैं, उनका पालन करते रहना। सबसे बड़ी परेशानी यह है कि होली तो मिलन का त्योहार है और कोरोना हमें डिस्टेंसिंग के लिए मजबूर करता है। इसलिए सावधान रहने की जरूरत है। अपने को जितना बचाकर होली खेलोगे, उतना ही है तुम अपने परिवार और देश की परेशानी को कम करोगे।

मार्च का महीना जा रहा है। अप्रैल से तुम्हारे स्कूल फिर से खुलेंगे। तो इंग्लिश के दो 'मार्च' नामक शब्दों को मिलाकर मैं तुमसे यही कहना चाहूंगा कि इस मार्च से मार्च करके आने वाले समय को बेहतर बनाओ और खूब तरक्की करो।

अनिल जायसवाल

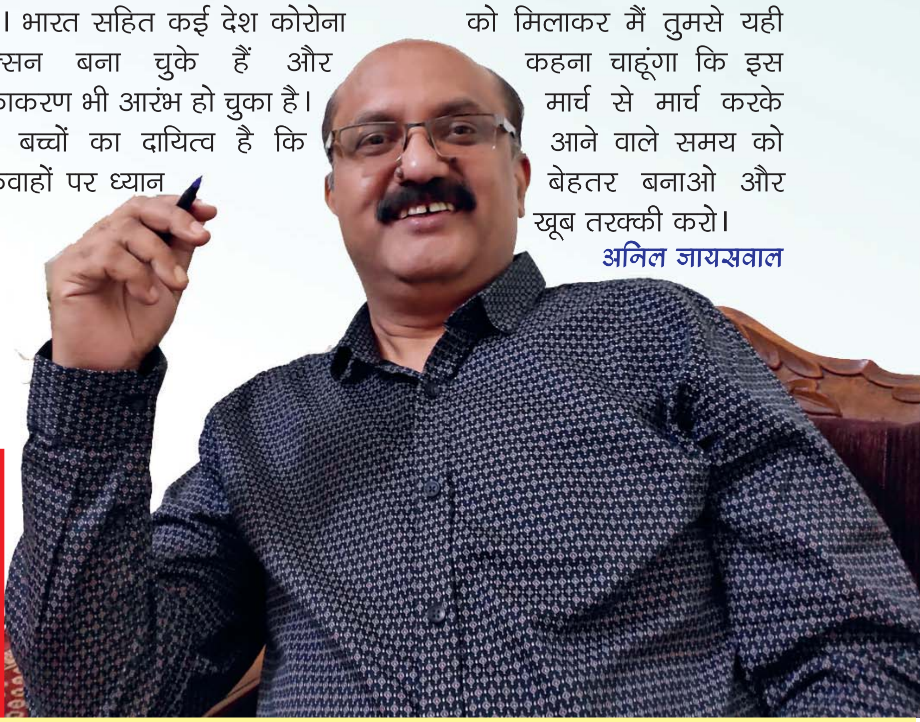

एक अपील

यह पत्रिका आप तक निशुल्क पहुंच रही है। अगर आप को लगे कि पत्रिका तैयार करने में मेहनत की गई है, तो पढ़ने के बाद 20 रुपए इसका शुल्क मानकर सहयोग करें। यह एच्छिक है। धन्यवाद

ऑनलाइन डिजिटल मासिक बाल पत्रिका **पायस**

संपादक : अनिल जायसवाल

Email : payasmagazine@gmail.com
Facebook : https://www.facebook.com/payasbaalpatrika
Whatsapp : 7982014609
Youtube : payas magazine
https://youtube.com/channel/UCvXDRK5Xz_dwnFfGwtfGLJg
Blog : https://payasbaalpatrika.blogspot.com/

◆ लेखक व बच्चे रचनाएं भेजने के लिए ईमेल का प्रयोग करें।
◆ ह्वाट्सएप पर रचनाएं स्वीकार नहीं की जाएंगी।

संपादकीय पता : **PAYAS MAGAZINE**
Anil Jaiswal, 174-B, DDA Lal Qtrs,
West Punjabi Bagh, New Delhi-110026

भारत में होली

हम भारत वासियों के लिए हर दिन एक नए त्योहार की तरह होता है क्योंकि त्योहार हमारे जीवन का एक महत्वपूर्ण हिस्सा बन चुका है। त्योहार हमें, हमारे परिवार या किसी और प्रकार के दुख से बाहर निकालने का एक जरिया है।

ऐसा नहीं है कि किसी एक धर्म या किसी एक समय में ही कोई त्योहार होता है। भारत के किसी ना किसी हिस्से में पूरे वर्ष में कोई न कोई त्योहार आयोजित होता रहता है। इन त्योहारों के बहाने हम भारतीय एक दूसरे से मिलते-जुलते हैं, एक दूसरे का सुख-दुख बांटते हैं, अपनी परंपराओं को याद करते हैं और जीवन में एक नई ऊर्जा भरते हैं।

होली और दीपावली भारत के प्रमुख त्योहारों में से एक है। होली तो अब किसी न किसी रूप में पूरे भारतवर्ष का त्योहार बन गया है। चाहे कृष्ण की नगरी मथुरा-वृंदावन की होली हो, महाराष्ट्र की होली हो, बंगाल की होली हो या पंजाब की होली हो, यह त्योहार सबके जीवन में उल्लास का रंग भर देता है।

हमारे अधिकांश त्योहारों की तरह होली भी एक बेहद प्राचीन त्योहार है। यह रंगों के साथ प्यार का भी त्योहार है। इसे भी दशहरा की तरह ही बुराई पर अच्छाई की जीत का प्रतीक माना जाता है। ठंड के बाद वसंत, होली के आगमन का संदेश लेकर आता है।

दो दिन के इस त्योहार में पहले दिन शाम को होलिका दहन का आयोजन होता है और उसके अगले दिन रंगो वाली होली खेलते हैं। होली का त्योहार विष्णु और कृष्ण से जुड़ा हुआ है। ब्रिज भूमि में राधा-कृष्ण होली के त्योहार के प्रतीक हैं। यहां होली प्यार का त्योहार है।

होली के त्योहार से अनेक कहानियां जुड़ी हुई हैं, जिनमें सबसे प्रसिद्ध कहानी प्रह्लाद की है।

कहते हैं, प्राचीन काल में हिरण्यकशिपु नाम का एक अत्यंत बलशाली असुर था। अहंकार में आकर वह खुद को ही ईश्वर मानने लगा। उसके राज्य में ईश्वर का नाम लेना भी अपराध था। परंतु उसका पुत्र प्रह्लाद विष्णु भक्त था। हिरण्यकशिपु ने बहुत प्रयास किया, पर प्रह्लाद ने ईश्वर की भक्ति का मार्ग न छोड़ा।

हिरण्यकशिपु की बहन होलिका को वरदान प्राप्त था कि वह आग में भस्म नहीं हो सकती। हिरण्यकशिपु के आदेश पर होलिका प्रह्लाद को गोद में लेकर आग में बैठ गई। सबको लगा, होलिका बच जाएगी और प्रह्लाद भष्म हो जाएगा। पर हुआ उलटा। आग में होलिका तो जल गई, पर प्रह्लाद बच गया। इसी दिन की याद में होली से पहले होलिका दहन का आयोजन होता है, फिर अगले दिन होली खेली जाती है।

विभिन्नता में एकता वाले इस देश

में अलग-अलग क्षेत्रों में इस त्योहार को अलग-अलग तरीके से मनाते हैं। इसके बावजूद हर परंपरा में प्रेम और उत्साह की समानता रहती है। लोग सब दुख भूलकर हर्ष और उल्लास के रंग में उस दिन सबको रंग में रंग देते हैं।

रंग-गुलाल से सजी होली का स्वागत विभिन्न क्षेत्रों के लोग अपने-अपने तरीके से करते हैं। कृष्ण और राधा की नगरी मथुरा-वृंदावन में होली की धूम कई दिनों तक छाई रहती है। इस क्षेत्र में रंग और गुलाल लगाकर लोग एक-दूसरे से स्नेह बांटते हैं।

राधा के गांव बरसाने में इस पर्व की अलग छटा नजर आती है। वहां की लट्ठमार होली तो विश्व-प्रसिद्ध है। यहां पर महिलाएं पुरुषों को लट्ठ से मारती हैं और पुरुष मार से बचते हुए उन्हें रंग लगाते हैं।

हरियाणा में होली के दौरान रिश्ते की मिठास की अनोखी मिसाल दिखती है, इस क्षेत्र में होली को 'धुलेंडी' का नाम देते हैं।

महाराष्ट्र और गुजरात की होली में जनमाष्टमी की छाप है। इन क्षेत्रों में मटकी-फोड़ होली की परंपरा बहुत प्रचलित है। पुरुष मक्खन से भरी मटकियों को फोड़ते हैं, जिसे महिलाएं ऊंचाई पर बांधती हैं। यह परंपरा कृष्ण के बालरूप की याद दिलाती है। महिलाएं होली के गीत गाते हुए उन पर बालटियों में रंग भरकर फेंकती हैं। मौज-मस्ती का यह पर्व बहुत अनोखा लगता है।

पंजाब में सिख होली के अगले दिन अनंतपुर साहिब में 'होला मोहल्ला' का आयोजन करते हैं। वहां ऐसा माना जाता है कि इस परंपरा का आरंभ दसवें व अंतिम सिख गुरु, गुरु गोविंदसिंहजी ने किया था।

देश के पूर्वी राज्यों में से पश्चिम बंगाल में होली को 'दोल' कहते हैं। इसी दिन महाप्रभु चैतन्य का जन्मदिन भी मनाया जाता है। दोल पूर्णिमा के अवसर पर महाप्रभु चैतन्य की प्रतिमा के साथ भक्तगण पूरे उत्साह के साथ सूखी होली खेलते हैं और नाचते-गाते हैं।

पूर्वोत्तर के मणिपुर में रंगों का यह त्योहार छः दिनों तक मनाया जाता है। साथ ही इस पर्व पर यहां का पारंपरिक नृत्य 'थाबल चोंगबा' का आयोजन भी किया जाता है। इस तरह से होली का यह पर्व पूरे देश को प्रेम और सौहार्द के रंग में सराबोर रखता है।

बिहार में यह पर्व बहुत उल्लास से मनाते हैं। वसंत पंचमी पर मां सरस्वती पर गुलाल चढ़ाकर होली के आरंभ की उद्घोषणा की जाती है।

दिल्ली में यह त्योहार परंपरागत तौर पर मनाते हैं। सुबह गीली होली, तो दोपहर बाद गुलाल से मेहमानों का स्वागत किया जाता है।

अब तो यहां मोहल्ला या सोसाइटी द्वारा इसका भव्य आयोजन होने लगा है। लोग आपस में होली खेलने के बाद घर जाकर नहा-धोकर वापस आते हैं और सामूहिक भोज का आनंद लेते हैं।

अनिल जायसवाल

बुरा न मानो होली है

जंगल में कुछ शांति छाई हुई थी। सब अपने-अपने दड़बों में घुसे हुए थे। रिया लोमड़ी परेशान सी इधर-उधर घूम रही थी और सोच रही थी कि कुछ ऐसा किया जाए कि जंगल में रौनक हो।

रिया जंगल के राजा गबरू शेर सिंह के पास गई, तो देखा, वह एक कुर्सी पर बैठकर चश्मा लगाए, अखबार पढ़ रहे थे। उनके चेहरे पर चिंता की लकीरें साफ दिख रही थीं।

रिया सोचने लगी, 'गबरू सिंह को इतना चिंतित तो कभी नहीं देखा। उनसे से पूछती हूं कि क्या बात है?'

गबरू सिंह ने रिया लोमड़ी को देखा, तो खुद को संभालते हुए बोले, "कहो बहन, कैसे आना हुआ?"

"महाराज, भला, बहन को भाई के पास आने के लिए इजाजत मांगनी पड़ेगी क्या? आप यह बताइए कि इतने चिंतित क्यों हैं?"

"चिंता का विषय यह है कि मैंने अखबार में पढ़ा कि दुनिया भर में शेरों के अस्तित्व पर संकट के बादल मंडरा रहे हैं।"

"क्या? यह तो अच्छी खबर नहीं है महाराज। यह तो सचमुच चिंता का विषय है।" रिया दुखी होकर बोली।

"इसीलिए मैं इतना परेशान हूं। अब तुम बोलो, कैसे याद किया?"

"याद क्या महाराज? जंगल में कुछ रौनक ही नहीं रही। कुछ ऐसा करें कि जिंदगी का मजा आ जाए।"

"बात क्या है, बहन? आज तो बड़े अच्छे मूड में लग रही हो?"

"महाराज, बात ही कुछ ऐसी है।

चित्र : इंदिरा

कोरोना कम होने के बाद, मैं चाहती हूं, जंगल में जश्न हो जाए। जीवन में उदासियों की वजह तो बहुत हैं। क्यों न हम सब मिलकर अपने जंगल में फिर से रौनक ले आएं?"

"वह कैसे बहन?"

"महाराज, कुछ ही दिनों में रंग-बिरंगी होली आने वाली है। जंगल के सारे पशु-पक्षी, जो ठंड और कोरोना की वजह से अपने-अपने दड़बों, घोंसलों या घर में घुसे बैठे हैं, वे निकल आएंगे। हम खुशियां-मनाएंगे, छोटे-बड़े सभी को हंसाएंगे। महाराज, ऐसा करने से आपसी मतभेद दूर होंगे। इसी में तो मजा है जिंदगी का।" रिया उत्साह से बोली।

"यह तो तुम ठीक कह रही हो, रिया। ऐसा करो, तुम सबसे चंदा इकट्ठा कर लो। सब सामान लाना होगा। पर इस बात का ध्यान रखना कि पेड़ नहीं कटें। उत्सव के नाम पर हरियाली को कोई नुकसान नहीं होना चाहिए। प्रदूषण का भी ख्याल रखना होगा। और हां, रंग खेलने वाले दिन के लिए, हर्बल रंगों का प्रयोग किया जाए, गुब्बारे नहीं। गुब्बारे चोट पहुंचाते हैं। पानी की बहुत कमी है। इसलिए, मैं चाहूंगा, गुलाल से ही होली खेली जाए। कू-कू कोयल रानी को कहना, वह भी गाने की तैयारी कर ले। बैंजा भालू भाई से कहना, अपने रेस्टोरेंट में गुझिया और मिठाइयां सब के लिए तैयार करें। लवी बंदरिया मामी से कांजी वाला पानी जरूर बनवा लेना। फिर देखो, क्या मजा आता है होली में।" शेर सिंह उत्साह से बोले।

"ठीक है महाराज, मैं सबको न्योता दे आती हूं और अपने-अपने काम पर लगा देती हूं।" कहते हुए रिया ने शेर गबरू सिंह से विदा ली।

रिया ने पूरे जंगल में ढिंढ़ोरा पिटवा दिया। सब पशु-पक्षियों में खुशी की लहर दौड़ गई। सब एक-दूसरे से मिलकर नई-नई योजनाएं बनाने लगे।

बैंजा भालू चाचा ने भी मिठाइयों की लिस्ट तैयार कर ली। डांस के लिए डीजे का इंतजाम भी कर लिया गया। लवी बंदरिया मामी कांजी डालने के लिए जार खरीद लाई। और तो और, कुछ ने तो होली के दिन के लिए रंग-बिरंगी टोपियां भी खरीद लीं।

इधर रिया सबसे चंदा इकट्ठा करने में लगी थी। कुछ पैसे दे रहे थे, तो कुछ मना कर रहे थे। बड़ी

विकट समस्या थी। रिया ने फिर समझाया, "साफ-सुथरी होली होगी, डरो मत, यह शेर गबरु सिंह महाराज का हुक्म है।"

शेर गबरु सिंह का नाम सुन, सब जानवर पैसे देने लगे। धीरे-धीरे होली का दिन भी नजदीक आ गया। सभी पशु-पक्षी मस्ती के मूड में थे।

होलिका दहन की तैयारी होने लगी। शाम के समय, ढोल के साथ सब इकट्ठे हो गए। होलिका पूजन के बाद, होलिका दहन हुआ। सबने गले मिलकर खुशी जाहिर की।

उस रात किसी को नींद नहीं आई। ऐसा लग रहा था जैसे, खुशी

अपने लेखक को जानिए

मधु गोयल : पिछले 15 सालों से लेखन कार्य में निरंतर सक्रिय। अब तक लगभग 200 कहानियां, कविताएं व लेख (बच्चों और बड़ों की) निरंतर देश की प्रतिष्ठित पत्रिकाओं में प्रकाशित।

के मारे आंखो से नींद ही उड़ गई।

अगले दिन का माहौल ही कुछ और था। डीजे की धुन पर नाचते समय सब पर मस्ती सवार थी। नटी बंदर मामा ठुमके लगा-लगाकर वह, बैंजा भालू चाचा के साथ मिलकर सबका ध्यान आकर्षित कर रहे थे। गुलाल के रंग अपनी इंद्रधनुषी छटा बिखेर रहे थे, नीनू चींटी रानी डर की वजह से कोने में दुबकी खड़ी थी। नीटू-चींटा उसका हाथ खींचकर ले जा रहा था, लेकिन वह न चलने की जिद पर अड़ी थी।

भीम गजराज भी शर्मीले स्वभाव के कारण दूर खड़े थे। शेर गबरु सिंह ने भीम गजराज से गुजारिश की, "अपनी सूंड़ में पानी भरकर, सब पर छिड़क दो। ऐसा करने से सब को गीली होली का एहसास होगा और पानी भी कम खर्च होगा।"

उधर लवी बंदरिया मामी सिर पर पल्लू ढके सब को कांजी पिलाने में व्यस्त थी। यह सब दूर खड़ा नटी बंदर मामा देख रहा था। वह चुपचाप बंदरिया मामी के पीछे गया और और गुलाल लगा दिया। यह नजारा देखकर सब ठहाके मारने लगे।

नटी बंदर मामा ने जोर से अवाज लगाई, "बुरा न मानो होली है।" यह सीन तो देखने लायक था। ✪

विदेशों में होली

वैसे तो होली विशुद्ध रूप से एक भारतीय त्योहार है, जिसका सीधा संबंध प्रह्लाद, उसकी बुआ होलिका और भगवान विष्णु से है। इस त्योहार को जनसाधारण का त्योहार बनाने में सबसे बड़ा हाथ श्रीकृष्ण का रहा। उनकी नगरी मथुरा-वृंदावन और राधा का गांव बरसाने अपनी होली के लिए जग प्रसिद्ध है।

ऐसा नहीं है कि होली सिर्फ भारत में ही खेली जाती है। होली जैसे त्योहार पूरे विश्व में मनाए जाते हैं। हां, वहां रंग और पानी का स्थान कोई और चीज ले लेता है।

तो आओ, जरा पूरे विश्व का चक्कर लगाएं और देखें कि होली जैसा त्योहार कहां-कहां मनाया जाता है ?

अनिल जायसवाल

बोरियंग मड फेस्टिवल

1998 के जुलाई महीने में पहली बार एक उत्सव का आयोजन दक्षिण कोरिया के नगर बोरियंग में हुआ।

कमाल की बात यह है कि इसमें पानी तो था, मगर रंग का स्थान मिट्‌टी ने ले लिया था, अर्थात मिट्‌टी और पानी के मिश्रण कीचड़ से लोग यहां होली खेलते थे।

इस खेल के लिए बड़े-बड़े प्लास्टिक के रिंग बनाए जाते थे, जिनमें कीचड़ बनाकर डाला जाता था। चंगच्योमन के समुद्र तट के आसपास बनाए जाने वाले इस रिंग में लोग एक-दूसरे को कीचड़ से सराबोर करते हैं।

इस कीचड़ के खेल को शुरू करने के पीछे मुख्य कारण इस नगर की मिट्‌टी के व्यापार को दुनिया के सामने लाना था। साथ ही लोगों को यह याद दिलाना भी था कि प्राचीन समय में नहाने से पहले स्किन को साफ करने के लिए मिट्‌टी का ही प्रयोग किया जाता था। कीचड़ में भरपूर खेल खेलने के बाद समुद्र में स्नान कर लोग तरोताजा हो जाते हैं।

ला टोमाटीना

स्पेन के बुनोल शहर के बैलेंसियन में अगस्त के आखिरी बुधवार को लोग टमाटर से होली खेलते हैं। जिस तरह हम भारत में पहले लोगों को गुब्बारे मारते थे, उसी तरह इस नगर में लोग एक-दूसरे को पके हुए लाल टमाटर मारते हैं। गुब्बारे खाकर हमारे यहां तो लोग फिर भी नाराज हो जाते हैं, लेकिन टमाटर से मार खाकर लोग हंसते रहते हैं। उस दिन इतने टमाटरों की बौछार होती है कि लगता है सड़क पर टोमेटो कैचप बह रहा हो।

ला टोमाटीना फेस्टिवल की शुरुआत सबसे पहले 1945 में हुई थी। तब कुछ युवा लोग एक जुलूस को देखने के लिए स्पेन के शहर में धरना देकर बैठ गए थे। जब पुलिस उन्हें रोकने के लिए आगे बढ़ी, तब उन्होंने पास में लगी सब्जी की दुकानों से सब्जियों व फलों को उठा-उठाकर उन पर फेंकना कर दिया। इसके बाद से यहां इसे उत्सव के रूप में मनाया जाने लगा। इस दिन इसमें भाग लेने के लिए पूरी दुनिया से स्पेन में बीस हजार से ज्यादा लोग आते हैं।

चिंचिल्ला मैलन फेस्टिवल

ऑस्ट्रेलिया के चिंचिल्ला इलाका मैलन यानी तरबूज के लिए पूरी दुनिया में मशहूर है। सन 1994 में यहां एक उत्सव आरंभ किया गया, जिसमें लोग तरबूज से खेलते हैं। उस दिन पूरा इलाका तरबूजमय हो जाता है। प्लास्टिक बिछाकर एक इलाका फिक्स कर दिया जाता है, जहां यह खेल होता है। इसमें भाग लेने के लिए लोग खासतौर पर तरबूज के डिजाइन वाले कपड़े भी पहन लेते हैं। तरबूज की टोपी पहनने से लेकर, जो भी आपके मन में हो, उस तरह तरबूज के संग आप यहां खेल खेल सकते हैं। हर वर्ष फरवरी के महीने में इसका आयोजन होता है और लोग इसमें बड़े उत्साह से भाग लेते हैं 4 दिन तक चलने वाले इस उत्सव में पूरी दुनिया से बीस हजार से भी ज्यादा लोग भाग लेते है।

हारो वाइन फेस्टिवल

स्पेन के हारो नगर में एक अनोखा उत्सव मनाया जाता है, जो कुछ-कुछ होली जैसा ही है। बस, इसमें पानी की जगह लोग एक-दूसरे पर वाइन डालते हैं। हर साल 29 जून के दिन हजारों लोग उत्तरी स्पेन के हारो शहर में इकट्ठा होते हैं। सुबह नौ बजे यहां लोग जग, गिलास बॉटल या किसी भी कैन में वाइन भरकर जुलूस के रूप में आगे बढ़ते हैं। इन सबका नेतृत्व करता है, उस शहर का मेयर, जो घोड़े पर सवार होकर आगे आगे चलता है। एक निश्चित स्थान पर पहुंचकर सब एक-दूसरे पर तब तक वाइन की बौछार करते हैं जब तक सब गीले ना हो जाएं।

सॉन्कर्न

थाईलैंड का सॉन्कर्न उत्सव बहुत कुछ भारत के होली से मिलता-जुलता है। सॉन्कर्न शब्द संस्कृत के संक्रांति से ही निकला है, जिसका अर्थ होता है गतिमान होना। हर वर्ष 13 से 15 अप्रैल तक इसे मनाया जाता है। इस दिन लोग बौद्ध मठ में जाते हैं। पूजा करते हैं और बौद्ध भिक्षुओं को खाना खिलाते हैं। इसके बाद शुरुआत होती है, होली जैसे पर्व की, जिसमें लोग एक-दूसरे पर किसी भी चीज से, चाहे वह बाल्टी हो, मग हो या पिचकारी हो, पानी की बौछार करते हैं। मुख्य सड़कें बंद कर दी जाती हैं ताकि लोग आराम से इस उत्सव का आनंद ले सकें

द बैटल ऑफ ऑरेंज

1808 से चल रहा यह खेल उत्सव स्पेन के ला टोमाटीना का इटालियन रूप जैसा लगता है। इटली के शहर इवरिया में फरवरी महीने में तीन दिन चलने वाले इस खेल में लोग एक-दूसरे पर संतरा की बौछार करते हैं। वहां मौजूद लोगों को 9 टीमों में बांटा जाता है और सब एक-दूसरे पर संतरे फेंकते हैं। काफी देर मस्ती के बाद सब एक जुलूस की शक्ल में मार्च पास्ट करते हैं और एक दूसरे से वादा करते हैं की अगले वर्ष फिर मिलेंगे करीब 400 टन संतरे इस दिन इस्तेमाल में लाए जाते हैं

निबलू की होली

निबलू बहुत देर से बैठा-बैठा शेरू के कान उमेंठ रहा था। बेचारा शेरू रह-रहकर दर्द के मारे कूं-कूं करके भागने की कोशिश कर रहा था।

तभी मम्मी आईं और बोलीं, "मैं होली के लिए गुलाल खरीदने बाजार जा रही हूं, तुम्हें चलना है क्या?"

पर भला निबलू को उनकी बात कहां सुनाई दे रही थी? वह तो शेरू के कान खींचने में तल्लीन था। कान दुखने के कारण शेरू कराह रहा था।

मम्मी को देखते ही शेरू जोर से चिल्लाने लगा। मम्मी ने देखा, निबलू उसे कानों से खींचकर उठाने की कोशिश कर रहा था।

निबलू की शैतानी देखकर उनका चेहरा गुस्से से लाल हो गया। उन्होंने कसकर निबलू का हाथ पकड़ा और बोली, "अगर तुम्हें कोई चेन से बांधकर इस तरह से सताए तो कैसा लगेगा?"

"मैं तो इसके साथ खेल रहा था। इसकी तो आदत है चिल्लाने की।" निबलू खिसियाते हुए बोला।

शेरू घबराता हुआ अपनी पूंछ सिकोड़कर मम्मी के पैरों को चाटने लगा। मम्मी ने प्यार से उसके ऊपर हाथ फेरा और कहा, "अब अगर तुम्हें निबलू ने परेशान किया, तो मैं इसे होली नहीं खेलने दूंगी और कमरे में बंद कर दूंगी।"

निबलू ने तुरंत मम्मी की ओर देखा, पर मम्मी तो शेरू को गोदी में बैठाकर हमेशा की तरह कोई कहानी सुनना शुरू कर चुकी थी।

'हे भगवान। अब कुत्ता भी कहानी सुनने लगा है।' सोचते हुए निबलू ने गुस्से से शेरू की तरफ देखा

"मुझे दूध दे दीजिए। सामने वाले पार्क में अपने दोस्तों के साथ होली का प्रोग्राम बनाने जाना है।"

"जाओ, खुद जाकर ले लो।" मम्मी ने शेरू को पुचकारते हुए कहा

निबलू ने शेरू को गुस्से से घूरा देखा, जो बड़े मजे से मम्मी की गोद में आराम से ऐसे बैठा हुआ था, मानो पूरी कहानी याद करके मोहल्ले भर के कुत्तों को सुनाएगा।

निबलू ने किचन में जाकर दूध लिया और सोचने लगा, 'इस शेरू के

चित्र : सुशील दोषी

कारण ही मम्मी मुझे हर समय डांटा करती हैं। इसे तो मैं ऐसा सबक सिखाऊंगा कि जीवन भर याद रखेगा।'

उधर जब शेरू को दूध रोटी देने के लिए मम्मी उठीं, तो निबलू को लगा कि वह अब रो ही देगा,इसलिए तुरंत घर से बाहर चला गया।

पार्क में पहुंचते ही सभी दोस्तों ने उसे घेर लिया और होली मनाने के बारे में बात करने लगे।

पर निबलू के दिमाग में तो कुछ और ही खुराफात चल रही थी। आखिर उसका दिमाग शैतानी का कारखाना जो था। वह तुरंत बोला, "जैसे पिछले साल हमने होली खेलने के बाद सारे दिन नाच-गाना किया था, वैसे ही कुछ इस साल भी किया जाए।"

"पर मम्मी कह रही थीं कि कोरोना के कारण हमें आपस में थोड़ी दूरी बनाकर रखनी चाहिए।" रिंकी बोली।

"हां, पापा भी कह रहे थे कि जब तक वैक्सीन नहीं लग जाती, हमें बहुत सावधानी रखनी होगी।" अमित ने कहा

"कोई बात नहीं, हम लोग दूर दूर नाच लेंगे।" निबलू ठुमका लगाता हुआ बोला, तो सभी बच्चे खिलखिलाकर हंस दिए।

"और हम सब सिर्फ गुलाल ही लेंगे, क्योंकि पिछली बार निबलू ने पता नहीं कौन सा लाल रंग डाल दिया था कि महीने भर तक मेरी खुजली ही बंद नहीं हुई थी।" वसंत ने नाराज होते हुए कहा।

"हां, याद है, तू सारे समय बंदर की तरह कभी सिर, तो कभी पैर खुजलाता रहता था।" निबलू ने जवाब दिया और ठहाका मारकर हंस दिया। हंसते हुए उसने सबकी ओर देखा कि सब मिलकर वसंत की बंदर वाली एक्टिंग उतारेंगे, पर ऐसा कुछ नहीं हुआ। सब उसे घूर रहे थे।

मिनी ने निबलू से कहा, "हम तुम्हें अपना दोस्त समझते हैं, इसलिए हर बार तुम्हें माफ कर देते है, वरना पापा ने तो तुमसे बात करने को भी मना कर रखा है।"

निबलू को तुरंत याद आ गया कि उसने पिछले साल मिनी के पापा की पीठ पर पानी के चार-पांच गुब्बारे इतनी जोर से मारे थे कि वह दर्द से तड़प उठे थे। अब भला उसे क्या पता था कि अंकल को निमोनिया था और उसके ठंडे पानी के गुब्बारों से उनकी तबीयत इतनी ज्यादा खराब हो

जाएगी कि उन्हें अस्पताल में भर्ती कराना पड़ेगा।

निबलू ने बात बदलते हुए कहा, "तुम लोग जैसा कहोगे, बिल्कुल वैसा ही होगा।"

"ठीक है, फिर हम सब लोग कल गुलाल और गुझिया के साथ यहीं पर मिलेंगे।" निर्मल ने खुश होते हुए कहा।

"हां, हम सब ठीक नौ बजे इसी पार्क में आ जाएंगे।" कहते हुए शिशिर मुसकरा दिया

पर निबलू के दिमाग में तो कुछ और ही चल रहा था।

वह लगभग दौड़ता हुआ घर पहुंचा और मम्मी से बोला, "कल मेरे सभी दोस्त सिर्फ गुलाल से

अपने लेखक को जानिए

मंजरी शुक्ला : हिंदी एवं अंग्रेजी में स्वतंत्र लेखन, बाल साहित्य की बारह पुस्तकें प्रकाशित, सभी स्तरीय पत्र-पत्रिकाओं में कहानियां प्रकाशित। अब तक सैकड़ों कहानियों का सृजन कर चुकी हैं। आजकल आकाशवाणी कुरुक्षेत्र में उद्घोषक।

होली खेलेंगे। इसलिए क्या मैं शेरू को भी अपने साथ ले जाऊं?"

"नहीं, शेरू पानी से बहुत डरता है। अगर किसी ने डाल दिया तो।"

"हम सब सामने वाले पार्क में ही रहेंगे। मैं अगर किसी के पास पानी देखूंगा, तो शेरू को तुरंत घर ले आऊंगा।"

मम्मी हंसते हुए बोलीं, "तुम शेरू को इतना प्यार करते हो कि उसके बिना होली भी नहीं खेलना चाहते। ठीक है, ले जाना।"

अगले ही दिन सुबह निबलू ने गुलाल के पैकेट लिए और फ्रीजर का ठंडा पानी एक बोतल में भर लिया।

जब वह शेरू के पास गया, तो शेरू उसे देखकर खुशी से पूंछ हिलाने लगा। निबलू ने उसे अपनी गोदी में उठाया और पार्क की तरफ दौड़ लगा दी।

पर पार्क में पहुंचकर वह सन्न रह गया। वहां तो कोई भी नहीं था। अब जाकर उसे ध्यान आया कि शेरू को बर्फ के पानी से नहलाने की खुशी में वह आठ ही बजे पार्क पहुंच गया था।

जैसे ही वह घर जाने को हुआ, तो कुछ लड़को ने उसे आवाज दी। उसने पीछे मुड़कर देखा, तो झाड़ियों के पास कुछ लड़के बैठे हुए थे।

सभी लड़के बहुत लंबे और तगड़े थे। उनमें से कोई भी निबलू की पहचान का नहीं था। सभी ऊपर से नीचे तक इतने सारे रंगों में रंगे हुए थे कि सिर्फ उनकी आंखें ही चमक रही थीं।

वे सभी उसके पास आकर खड़े हो गए। निबलू डर के मारे कांप उठा।

"बिना रंग लगाए, तो तुझे नहीं जाने देंगे।" कहते हुए एक लड़के ने निबलू के हाथ से शेरू को छीन लिया और दूसरे ने अपनी जेब से रंग की पुड़िया निकाल ली।

"अरे वाह, इसके पास तो पानी भी है। देना तो जरा सा मेरी हथेली में ...।" एक घुंघराले बाल वाले लड़के ने कहा।

"जरा सा क्यों, इसकी बोतल में ही रंग डाल दो, तो अच्छे से रंग लगेगा।" एक लड़का चिल्लाया।

शेरू कूं-कूं करके खुद को छुड़ाने की कोशिश कर रहा था, पर एक महीना का पिल्ला भला लंबे-चौड़े लड़के की गिरफ्त से कैसे छूटता।

तभी घुंघराले बाल वाले लड़के ने बोतल का सारा पानी निबलू के ऊपर डाल दिया।

बर्फ का पानी पड़ते ही निबलू को ऐसा लगा, जैसे उसका सिर सुन्न हो गया हो। रोते हुए उसने भागने की कोशिश की, तो उस लड़के ने निबलू का कान पकड़कर उमेठ दिया।

निबलू जोर-जोर से रोने लगा। तभी पेड़ के पास वाला लड़का चिल्लाया, "कुछ लोग इधर ही आ रहे हैं, जल्दी भागो, वरना पिटाई हो जाएगी।"

सभी लड़के निबलू का मजाक उड़ाते हुए भाग गए। ठंड से कांपता हुआ निबलू हिचकियां ले-लेकर रोने लगा।

शेरू बार-बार निबलू के पैर चाट रहा था और उसके चारों तरफ घूम रहा था। निबलू ने शेरू की तरफ देखा और उसे गोदी में उठाकर भींच लिया। शेरू खुशी के मारे पूंछ हिलाने लगा। निबलू बार-बार शेरू को पुचकारते हुए बुदबुदा रहा था, "मुझे माफ कर दे शेरू।"

और फिर निबलू ने शेरू और अपने दोस्तों के साथ खूब होली खेली, पर निबलू ने शेरू के माथे पर सिर्फ गुलाल का ही सुंदर सा गुलाबी टीका लगाया था। आखिर शेरू अब उसका सबसे अच्छा दोस्त जो बन चुका था।

रंग होली के

अनिल जायसवाल

होली खेलने के लिए मोहल्ले के बच्चों की पूरी टीम आने वाली थी, पर रोहन था कि कमरे से बाहर आने को ही तैयार नहीं था। पापा से लेकर मम्मी और दादी तक, एक-एक कर सब उसे मनाने के लिए आ चुके थे, पर रोहन था कि मानने को तैयार ही नहीं था। बात जैसी बात नहीं थी, पर रोहन जब रूठता था, तो उसे मनाना सचमुच मुश्किल हो जाता था।

बात कल शाम की थी। रोहन मम्मी के साथ बाजार में था। तभी उसे एक जंबो पिचकारी दिखाई दी। हाथी की शक्ल की पिचकारी में जब सूंड को ऊपर करते, तो उससे रंग की धार निकलती थी। रोहन उसे खरीदने के लिए जिद करने लगा। मम्मी होली का सामान लेने बाजार आई थीं और उनके पास ज्यादा पैसे भी नहीं थे। फिर पिछले साल ही उन्होंने रोहन की जिद पर एक नई पिचकारी खरीदी थी। थोड़ी देर पहले तक रोहन उसी से होली खेलने को तैयार था, पर बाजार में जाते ही नई रंग-बिरंगी पिचकारी देखकर उसने अपना रंग बदल लिया था। मम्मी ने उसकी एक न सुनी और उसे किसी तरह डांटते-डपटते घर वापस ले आईं। बस, रोहन ने अपनी बात नहीं माने जाने पर ऐलान कर दिया कि वह इस बार होली ही नहीं खेलेगा।

आज होली का दिन आ गया था, पर रोहन अपनी जिद पर कायम था। मम्मी किचन में पकवान बनाने में

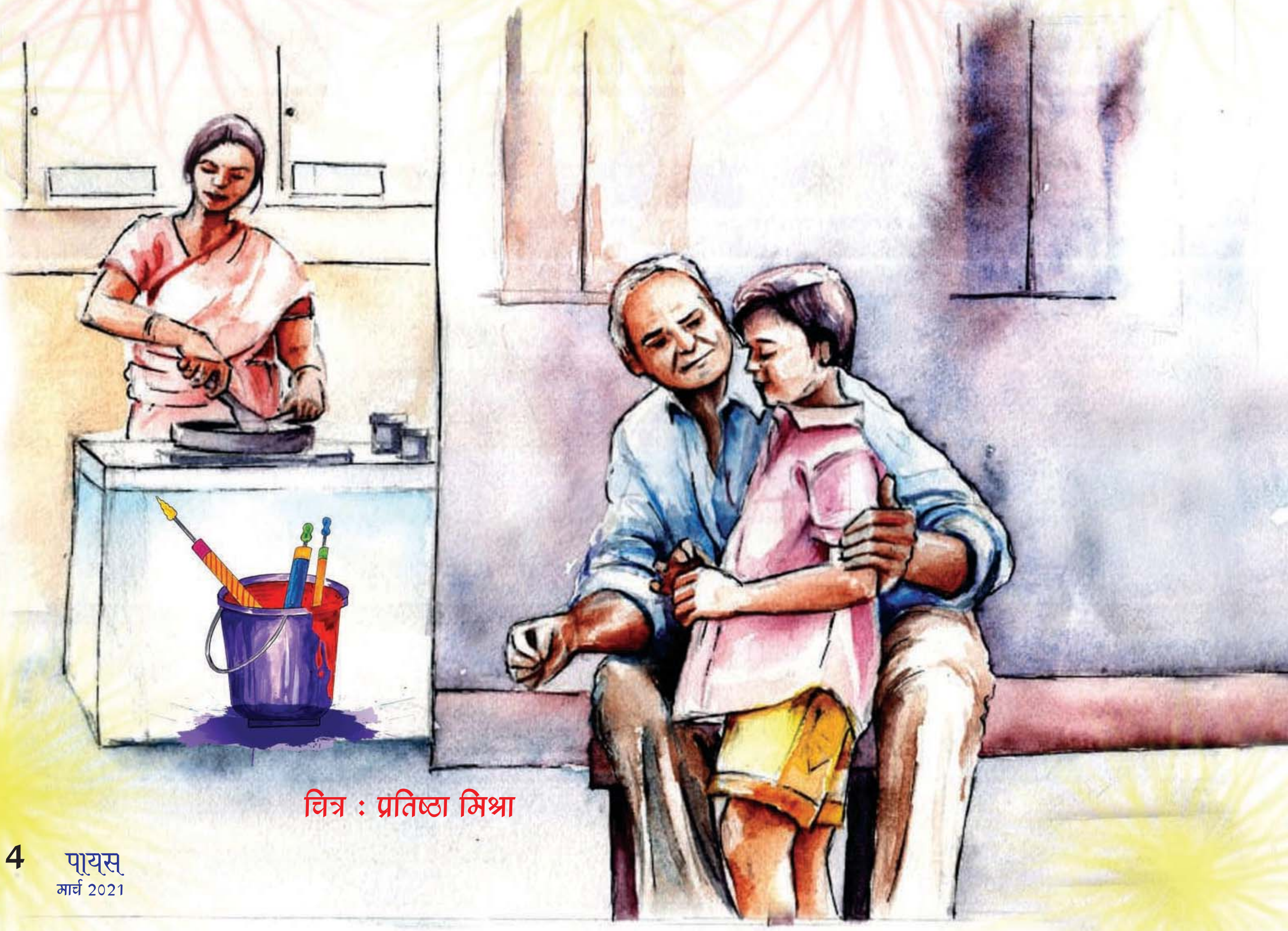

चित्र : प्रतिष्ठा मिश्रा

व्यस्त थीं और बाकी लोगों का काम था रोहन को मनाना, पर वह ऐसे कब मानने वाला था?

आखिर अब दादाजी ने मोर्चा संभाला। वही जानते थे कि रोहन आखिर पटेगा कैसे। वह धीरे से रोहन के पास बैठ गए और बोले, "यह तुमने बहुत अच्छा किया कि इस बार होली नहीं खेल रहे हो। मुझे भी होली खेलना बिल्कुल पसंद नहीं है।"

"क्यों? मुझे तो होली खेलना बहुत पसंद है, पर मम्मी से नाराज हूं, इसलिए नहीं खेल रहा हूं।" रोहन ने मुंह फुलाकर जवाब दिया।

"अच्छा किया। तुम्हारी मम्मी से मैं भी बहुत नाराज हूं। उन्होंने मेरे पोते की बात नहीं मानी। मैं तुम्हारे पापा को सारी बात बताता हूं। वह उन्हें डांटेगा।"

"वह क्यों मम्मी को डांटेंगे? मम्मी को कोई नहीं डांटेगा।" रोहन झट से बोला।

"अरे वाह! अभी तो तुम मम्मी से नाराज थे।" दादाजी मुसकराते हुए बोले।

"हां, वह तो हूं। इसीलिए तो होली नहीं खेल रहा हूं।" कहते हुए रोहन कसमसाया। उसे खिड़की से बाहर होली खेलते लोगों में अपने दोस्त भी नजर आने लगे थे।

"लेकिन पता है बेटा, होली न खेलने से तुम्हें कितने फायदे हैं? देखो, न तो तुम्हारे कपड़े खराब होंगे, न तुम्हारे रंग खत्म होंगे। तुम उन रंगों से अगले साल आराम से होली खेलना। और सबसे बड़ी बात, पिछले साल शैवी ने तुम्हें कैसे रंग से नहला दिया था। तुम उससे बदला लेने वाले थे। बदला लेना अच्छी बात नहीं होती। किसी बहाने ही सही, तुम गलत काम तो नहीं करोगे।" दादाजी मुसकराते हुए बोले।

"नहीं, मुझे तो बदला लेना है। शैवी के लिए मैंने पापा से स्पेशल रंग मंगवाया है, वही डालूंगा।" रोहन के चेहरे पर गुस्सा झलकने लगा था।

"पर कैसे, तुम तो होली खेलोगे नहीं।" दादाजी हंसे।

' 'अरे हां, यह तो मैं भूल ही गया था।" कहते हुए फिर से रोहन का चेहरा बुझ सा गया।

"तो तुम एक काम क्यों नहीं करते?" दादाजी के चेहरे पर मुसकराहट बढ़ती जा रही थी।

"क्या?" रोहन ने उत्सुकता से पूछा।

'तुम इस बार होली खेल लो। मैं तुम्हारी मम्मी से वादा करवाता हूं कि अगली बार तुम्हें जरूर नई पिचकारी खरीद देंगी?" दादाजी ने राह सुझाई।

"नहीं, मुझे इसी बार नई पिचकारी चाहिए।" रोहन ने जोर से कहा, पर उसमें अब जिद की मात्रा कुछ कम हो गई थी।

"तो ठीक है। इस बार हम लोग दूसरों को होली खेलते देखते हैं। चलो, बालकनी से देखने में मजा आएगा। तुम्हारे दोस्तों की टोली बस आने ही वाली है।" कहते हुए दादाजी उठने लगे।

"पर..., पर..., मम्मी मान तो जाएंगी, अगले साल पिचकारी खरीदने के लिए?" रोहन ने बेचैनी से पूछा। 'दोस्त आने वाले हैं, और वह तो अभी तैयार भी नहीं है', यह

सोचकर उसे बेचैनी होने लगी थी।

"हां-हां खरीद देंगी। मैं वादा करता हूं।" दादाजी ने समझाया।

"फिर ठीक है। मैं मम्मी से पूछता हूं।" कहते हुए वह किचन की ओर दौड़ा। वहां देखा, मम्मी बालटी में रंग घोलकर खड़ी थीं और पापा के हाथ में उसकी पुरानी पिचकारी थी। पापा ने पिचकारी उसकी तरफ बढ़ाई, तो वह झिझका। फिर बोला, "पहले मम्मी, आप वादा करो कि अगली बार नई पिचकारी खरीद दोगे।"

"हां बेटा, जरूर। पहले इस बार की होली तो खेल लो।" मम्मी ने मुसकराते हुए पकौड़े उसकी ओर बढ़ा दिए।

"यह तो खा लूंगा, पर पहले कपड़े तो दे दो।, मेरे दोस्त आ जाएंगे, तो क्या उनके सामने तैयार होऊंगा?" रोहन ने पकौड़ा पकड़ते हुए कहा।

मम्मी मुसकराते हुए बेटे की पप्पी लेकर कमरे की ओर जाने लगीं। अब तक रोहन का चेहरा भी खिल गया था। उसने धीरे से कहा, "अच्छा किया मम्मी, जो आपने पिचकारी नहीं खरीदी।"

"क्यों?" पापा ने पूछा।

'उनके पास पैसे ही नहीं बचते। फिर मैं ये पकौड़े कैसे खा पाता?" कहते हुए रोहन मुसकराया और तैयार होने के लिए कमरे की ओर भागा।

बाहर से 'होली है' की आती आवाज ने उसके जोश को बहुत बढ़ा दिया था। ✪

अनूठी सोच बच्चों की

होली का त्योहार आने वाला था, मोहल्ले के सारे बच्चों ने इस बार होली को एक अलग अंदाज में मनाने का निश्चय किया।

बच्चों ने एक मीटिंग रखी। घंटों बहस चलने के बाद निर्णय लिया गया, "इस कोरोना जैसी वैश्विक महामारी में भले ही वैक्सीन आ गई है, लेकिन हम लोग कोई भी असावधानी नहीं करेंगे, बल्कि अपने स्वास्थ्य का ध्यान और पूरी सावधानी रखते हुए हर साल की भांति इस साल भी बड़े ही धूम-धाम से होली मनाएंगे।"

तभी एक बच्चे ने कहा, "क्यों न इस बार घर में ही रंग और गुलाल बनाए जाएं ?

सभी बच्चों ने उसकी बात का समर्थन किया और एक स्वर में कहा, "हां, यह आइडिया अच्छा है। इस बार घर में ही गुलाल बनाते हैं और अपने-अपने घर वालों को सरप्राइज देते हैं।"

सभी घर आ गए और गुलाल को बनाने वाली सामग्रियों को जुटाने में लग गए। किसी ने दादाजी से पूछा, तो किसी ने इंटरनेट की मदद ली।

सभी जानकारियों को एकत्रित करने के बाद सभी बच्चों ने निर्णय लिया कि गुलाल फूलों से बनाएंगे।

फूलों से गुलाल बनाना सरल है और ये सभी के घरों में मिल भी जाएगा ।

तरह-तरह के फूल एकत्र किए गए। किसी के यहां गुलाब, किसी के यहां गुड़हल, तो किसी के यहां गेंदा के फूल थे। सभी ने अपने-अपने घरों के फूलों को तोड़कर उन्हें सूखने के लिए छतों पर फैला दिया।

सूखने के बाद अब उन फूलों के पीसने की बारी आई, तो अब समस्या खड़ी हो गई। इन्हें पीसे कैसे ? अगर मम्मी को बताते हैं, तो सरप्राइज खराब हो जाएगा।

फिर मीटिंग हुई। सभी ने योजना

चित्र : जय खोहवाल

बनाई, “अनुज के दादाजी की मदद लेते हैं और उनसे अनुरोध करेंगे, वे किसी को बताएं नहीं।”

सभी अनुज के दादाजी के पास पहुंचे और उन्हें अपनी समस्या बात बताई। दादाजी उनकी मदद करने के लिए तैयार हो गए। उन्होंने वादा किया कि होली तक किसी को कुछ नहीं बताएंगे।

एक दिन दादाजी की मदद से चुपचाप फूलों को पीसा गया। होली आते-आते गुलाल बनकर तैयार हो गया।

सभी बच्चे खुशी से झूम उठे और एक-दूसरे के गले मिले। दादाजी का आशीर्वाद लिया। अगले दिन होली थी, बहुत सारी तैयारियां करनी थीं। इसलिए सभी बच्चे अपने-अपने घर लौट आए।

सुबह होते ही सभी लोग अपनी अपनी तैयारियों में जुट गए। किसी ने थाल लगाई, तो किसी ने उन थालों में गुलाल भरा। होली खेलने का समय आने तक सब कुछ तैयार हो गया और जल्दी-जल्दी सभी लोग खुद भी तैयार होने चले गए।

जब सभी के माता-पिता और घर के अन्य सदस्य होली खेलने के लिए मैदान में आए तो देखा, घर में बना ढेर सारा शुद्ध गुलाल रखा है।

बच्चों की एक अद्भुत सोच और मेहनत को देखकर सब बहुत प्रसन्न हुए। सभी ने बच्चों से कहा, “इस अद्भुत कार्य के लिए हमें आप पर गर्व है।”

सभी ने अपने-अपने बच्चों को गले से लगा लिया। ✪

अपने लेखक को जानिए

अरुण कुमार यादव : एक छात्र, जो हमीरपुर जिले के छोटे से गांव उमरी में रहते हैं। हाल ही में डी एल एड की परीक्षा उत्तीर्ण की है, और अध्यापक बनना चाहते हैं। कुछ बाल रचनाएं विभिन्न पत्र-पत्रिकाओं में प्रकाशित हुई है।

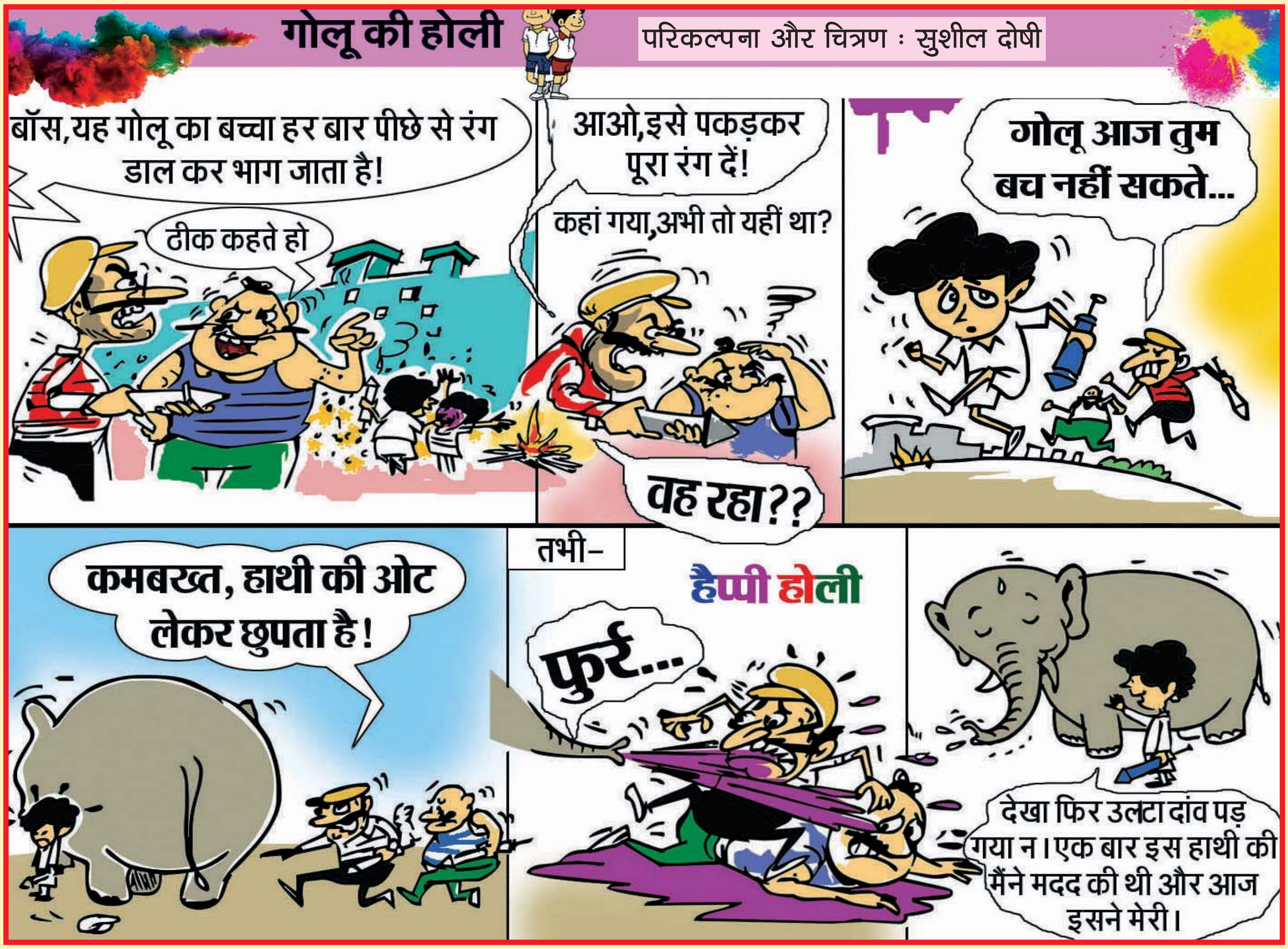

दुनिया में सब समान हैं

1 मार्च : शून्य भेदभाव दिवस
8 मार्च : महिला दिवस : करनी तैयारी पूरी है, महिला सम्मान जरूरी है

अनिल जायसवाल

भेदभाव किसी भी क्षेत्र में हो, बुरा होता है, खासकर अगर यह भेद भाव लिंग या जाति देखकर किया जाए। एक सर्वे के अनुसार अगर इस दुनिया में भेदभाव पर अंकुश लग जाए, तो आधी परेशानी दूर हो जाएगी।

भेदभाव एक ऐसा कार्य है, भावना है, जिसका सामना दुनिया के अधिकांश लोगों ने किया है। भेदभाव और ज्यादा बुरा तब हो जाता है, जब इसका प्रदर्शन महिलाओं पर किया जाता है।

सदियों से महिलाओं के साथ भेदभाव होता रहा है। चाहें पौराणिक कहानियां हों, या साहसिक, अधिकांश के केंद्र में पुरुष पात्रों को स्थान मिलता है। अधिकांश योद्धा पात्र पुरुष ही बनाएं जाते हैं। तुमने जो कहानियां पढ़ी होंगी, उनकी शुरुआत एक था राजा या एक था राजकुमार से ही हुई होंगी। राजकुमारी पर लिखी गई कहानियों में उनके हिस्से सुख से ज्यादा दुख ही आते हैं।

पर अब समय बदला है। महिलाएं हर क्षेत्र में पुरुषों के बराबर साबित हो रही हैं। परंतु परेशानी यह है कि महिलाओं के प्रति भेदभाव या हिंसा में कमी नहीं हो रही है। इस भेदभाव को मिटाना ही आज के समाज के लिए सबसे बड़ी चुनौती है।

भेदभाव की शुरुआत घर से होती है। तुमने शायद कभी ध्यान नहीं दिया होगा, अगर तुम लड़के हो और तुम्हारी कोई छोटी या बड़ी बहन है, तो अगर नाश्ता बनने पर या दूध का गिलास सबसे पहले तुम्हारे हिस्से आता है, तो समझ जाओ कि घर मे भेदभाव हो रहा है। कभी घर में मेड के न आने पर बर्तन साफ करने लिए या सब्जी काटने के लिए मां तुम्हारे बदले बहन को आवाज लगाती है, या कभी मां की तबीयत ठीक नहीं और घर में खाना बनाने की जिम्मेदारी पापा या तुम्हारे बदले, तुम्हारी बहन उठाती है, तो मान लो कि तुम्हारे घर में भी भेदभाव हो रहा है। हम धरती पर आए हैं, तो पुरुष हो या स्त्री, सब

के अधिकार बराबर हैं, ऐसे में यदि किसी पुरुष के मुकाबले किसी भी रूप में किसी स्त्री के साथ भेदभाव हो रहा है, तो यह शर्म की बात है।

भेदभाव और भी हैं। यदि तुम बाजार गए हो, किसी दुकानदार से सामान खरीदने से तुम इसलिए झिझके कि उसका धर्म, उसकी जाति, उसका पहनावा या रंग तुम्हें पसंद नहीं, तो यह भी भेदभाव का ही अंग है। अगर कोई दोस्त बीमार पड़ गया और तुमने उससे बातचीत बंद कर दी, तो यह भी भेदभाव का ही एक रूप है। अमेरिका में रंग के आधार पर भेदभाव एक बीमारी का रूप ले चुका है। इसका शिकार अभी वहां की उपराष्ट्रपति बनने वाली कमला हैरिस भी हो चुकी हैं।

दुनिया में जाति, लिंग (स्त्री-पुरुष) और रंग को लेकर सबसे ज्यादा भेद भाव किया जाता है। आज स्त्री के प्रति

भेदभाव के बाद, रेसिएल एब्यूज यानी नस्लीय गाली का मुद्दा सबसे गर्म है। इन्हीं भेदभाव पूर्ण बातों की ओर लोगों का ध्यान आकर्षित करने के लिए संयुक्त राष्ट्र संघ हर वर्ष मार्च महीने की पहली तारीख को 'जीरो डिस्क्रीमेशन डे' यानी 'शून्य भेदभाव दिवस' का आयोजन करता है। यह एक वार्षिक आयोजन है, जिसके द्वारा कानून के सामने सबकी बराबरी और संयुक्त राष्ट्र के सदस्य देशों में समान व्यवहार को बढ़ावा दिया जाता है। 1 मार्च 2014 को पहली बार यह दिन मनाया गया था। 'शून्य भेदभाव दिवस' सभी के अधिकारों से सबको परिचित कराने के लिए मनाया जाता है, भले ही भेदभाव उम्र, लिंग, राष्ट्रीयता, जातीयता, रंग, आदि के रूप में हो। इस दिवस पर पूरी दुनिया में महिलाओं व लड़कियों को सम्मान के साथ जीवन जीने का अधिकार, शिक्षा, स्वास्थ्य और रोजगार के क्षेत्र में बराबरी के अवसर के लिए आवाज उठाया जाता है।

इस वर्ष का थीम

इस वर्ष महिलाओं और लड़कियों के प्रति शून्य भेदभाव दिवस मनाया जाएगा। तितली को इसके प्रतीक के रूप में चुना गया है। भाव यही है कि तितली समान उड़ने का अवसर हर

महिला और लड़कियों के मिलने चाहिएं। पर इनकी तुलना तितली की कोमलता से नहीं करना क्योंकि इन्होंने एक नहीं, तमाम मौकों पर साबित किया है कि मौका मिलने पर ये मर्दों से ज्यादा मजबूत और दृढ़ निश्चयी हैं।

दुनिया के हर हिस्से में महिलाओं और लड़कियों के प्रति भेदभाव होता है। जाने अनजाने में हम सब इस तरह का भेदभाव करते रहते हैं।

ऐसे में जरूरी है कि आज तुम बच्चों शुरु से ही यह बात बताई जाए कि इस दुनिया में सब एक ही रूप में आते हैं। बाद में ऊंच-नीच, गोरा-काला, अमीर-गरीब इत्यादि गंदगी सीखते है। फिर जाने-अनजाने महिलाओं और लड़कियों के प्रति भेदभाव करना भी सीख जाते हैं। ऐसे में देश-दुनिया के भविष्य यानी तुम बच्चे, महिलाओं और लड़कियों को अपने समान मानकर उनसे भेदभाव करने न सीखो, तो यह दुनिया सचमुच सुंदर हो जाएगी।

भेदभाव का दर्द सबने सहा है, तुम इसे मिटाओ

भेदभाव को दूर करना इतना मुश्किल भी नहीं है। बस, खुद को मजबूत बनाकर दूसरों का सम्मान करना शुरू कर दो। तुम्हारे घर में बर्तन वाली बर्तन मांजने आती है, तो तुम उससे श्रेष्ठ कैसे हो गए? वह मेहनत करके कमा रही है। इसी तरह सब्जी बेचने वाला या तुम्हारे लिए किसी भी तरह का काम करने वाला तुमसे उतना ही सम्मान पाने का हक रखता है, जितना तुम रखते हो, अपना हक मानते हो।

तुम और तुम्हारी बहन दोनों को भूख लगी है। मां खाना लाईं, दोनों को साथ में दिया, तो ठीक, नहीं तो अपनी बहन का सम्मान करते हुए तुम अपना खाना बहन को देकर महिलाओं को प्रति हो रहे भेदभाव पर एक चोट मार सकते हो।

तुम्हारी क्लास में कोई गरीब बच्चा है, और क्लास के बच्चे उसे तंग करते हैं, या उसका मजाक उड़ाते हैं, तो तुम उस बच्चे के साथ खड़े होकर उसका हौसला बढ़ा सकते हो।

लड़कियों के साथ सबसे ज्यादा भेदभाव खेल के मैदान में होता है। उन्हें अपने साथ खेल में बराबरी का दर्जा दो। उनसे हारने पर शर्म न करके यह सोचो कि तुम अपने से बेहतर खिलाड़ी से हारे हो।

छोटी-छोटी शुरुआत की जरूरत होती है, कुछ बड़ा करने के लिए। याद रखो, नदियां जहां से शुरू होती हैं, वह स्थान बड़ा संकरा होता है, पर धीरे-धीरे उसका आकार इतना विशाल हो जाता है कि उसके किनारे सभ्यता का विकास होता है।

बच्चों, इस देश, इस समाज और इस दुनिया को अब तुमसे ही उम्मीद है कि तुम भेदभाव के राक्षस का खात्मा करोगे और महिलाओं को सम्मान देकर उन्हें विश्वास दिलाओगे कि वह कहीं, किसी क्षेत्र में औरों से कम नहीं।

बेईमानी मत कर

अपने लेखक को जानिए

डॉ. गोपाल राजगोपाल : सामुदायिक चिकित्सा विभाग, में आचार्य। छह पुस्तकें प्रकाशित। देश-विदेश की अनेक पत्र-पत्रिकाओं में नियमित प्रकाशन।

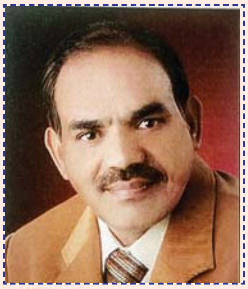

होली पर बेईमानी मत कर
किट्टू तू नादानी मत कर।

मुझे पता रंगों की थैली
तूने कहीं छुपा दी है,
औरों के रंगों से खेलो
किसने तुझे सलाह दी है ?

रंग बिखरने दे अब सारे
तू उनकी निगरानी मत कर,
किट्टू तू नादानी मत कर
होली पर बेईमानी मत कर।

घर में छुप कर तू बैठा था
पिछले बरस भी होली में,
लाख मनाया ना आया तू
होली खेलने टोली में।

पानी की पिचकारी भर ले
खुद को पानी-पानी मत कर,
किट्टू तू नादानी मत कर
होली पर बेईमानी मत कर।

बचपन तो निश्छल होता है
वो क्या तेरा-मेरा जाने,
बड़े-बड़े हैं वो भी अक्सर
चल देते हैं बचपन पाने।

बचपन में बचपन से दूरी
ऐसी खींचा-तानी मत कर ,
किट्टू तू नादानी मत कर
होली पर बेईमानी मत कर ।

चित्र : नंदा कुमार शेनॉय

ठहरा हुआ पानी

22 मार्च
विश्व पानी दिवस
पर विशेष

नन्ही-नन्ही जल की बूदें एकता का प्रतीक थीं। सब बूदें मिलकर जल धाराएं बनाती थीं। हिमालय से निकलने वाली इन जल धाराओं का संगम पंचेश्वर में होता और सारा पानी काली नदी का रूप लेकर आगे बढ़ता था।

नदी के पानी का यह कारवां कब से बहता जा रहा था, यह बात किसी को मालूम न थी। हां, यह सभी जानते और समझते थे कि इनका 'कल-कल छल-छल' करता हुआ स्वर जीवन में निरंतर आगे बढ़ने का संदेश देता है।

हिमालय के अलग-अलग जगहों से आई उन सभी जल धाराओं का रंग-रूप एक जैसा था। उनके विचार भी एक समान थे। अपनी मातृभूमि के लिए कुछ न कुछ योगदान करने की इच्छा सदा उनके मन में रहती। इसी उत्साह से वे आगे बढ़ती जातीं कि उनका छोटा सा जीवन भी किसी काम आना चाहिए।

जल धाराओं की आपस में काम की बातें भी होती रहती थीं। एक सुबह जब वह टनकपुर शहर के नजदीक पहुंचीं, तो उन्होंने एक-दूसरे से पूछा, "आज कौन किस दिशा में और किस काम पर जाएगा?"

पहली जल धारा दूर-दूर तक फैले खेतों की ओर देखते हुए कहा, "मैं आज नदी से निकलने वाली गूल में बहने जा रही हूं। बारिश न होने से किसानों की फसलें खराब हो रही हैं। खेतों को सींचना हमारा कर्तव्य है।"

"मैं शहर के लोगों की प्यास बुझाऊंगी। इसलिए नलों में बहकर लोगों की सेवा करूंगी।" दूसरी धारा ने मुसकराते हुए अपनी बात बताई।

तभी एक अन्य जल धारा बोली, "मुझे तो जल विद्युत परियोजना, बनबसा को जाने वाली बड़ी नहर का हिस्सा बनना है और वहां टरबाइन घुमाकर बिजली पैदा करनी है।"

मजाकिया स्वभाव वाली एक जल धारा लहराती हुई कहने लगी, "नदी किनारे धोबी घाट की ओर जाकर लोगों के गंदे कपड़ों की सफाई करने में मुझे खुशी होगी।"

सब से अंत में दूर से आई हुई धारा ने अलसाते हुए कहा, "मैं तो

यहां तक बहते-बहते बहुत थक चुकी हूं। मुझे अब कहीं नहीं जाना है। जिसे मेरे पानी की जरूरत होगी, वह खुद मेरे पास आएगा।”

उसकी बात सुनकर साथी जल धाराएं एक-दूसरे को देखने लगीं। तब उस मजाकिया जल धारा ने उस आलसी को टोका, “हम तो सीधी-सादी बात जानते हैं कि बहते-बहते आगे बढ़कर परोपकार करना ही हमारा धर्म है। इसलिए तुम्हें भी हमारी तरह दूसरों की भलाई वाले काम करने चाहिएं।”

यह सुनकर आलसी धारा आगे कुछ नहीं बोली। उसने अपनी गति जरूर कम कर ली। कुछ दूर तक नदी में बहते हुए उनका साथ दिया। जैसे ही उसे तट पर एक पुराना और सूखा पोखर दिखा, वह तुरंत उधर मुड़ गई। अपने साथ लाखों बूंदों को लेकर वह पोखर में पहुंची और बहुत खुश हुई। वह खुद ही बुदबुदाते हुए कह रही थी, “कौन रोज-रोज इन नदी-नालों के साथ लंबा सफर तय करे। अब जीवनभर इसी पोखर में आराम से रहूंगी।”

पोखर में आलसी जल धारा के कुछ दिन तो ठीक बीते। समय बढ़ने के साथ-साथ उसे अकेलापन महसूस होने लगा। पोखर से वह न तो इधर-उधर आ-जा सकती थी और न ही उसकी किसी अन्य जल धारा से बातचीत हो सकती थी। चाह कर भी वह नदी में वापस लौट नहीं सकती थी।

धीरे-धीरे हवा के झोंकों के संग धूल-मिट्टी, सूखे पत्ते भी पोखर के अंदर गिरते रहते थे। इस कारण पोखर का पानी मैला हो गया और पानी की सतह पर हरी-पीली काई उगने लगी। पानी में गंदगी और दुर्गंध होने से जीव-जंतुओं ने उस पोखर की तरफ आना छोड़ दिया।

आलसी धारा अलग-थलग पड़ गई। उसको जोर का झटका तब लगा, जब उसे मालूम पड़ा कि रोजाना उसकी असंख्य बूंदें कम होती जा रही हैं। पोखर के पानी की बूंदें धूप से वाष्प बनकर लगातार सूखती जा रही थीं। रही-सही कसर पोखर की मिट्टी ने पूरी कर दी। रोज थोड़ी-थोड़ी बूंदें जमीन सोख रही थी।

यह देखकर जल धारा घबरा गई और हड़बड़ाती हुई बची हुई बूंदों से बोली, “यदि तुम इसी तरह मेरा साथ छोड़ती चली गईं, तो मेरा अस्तित्व समाप्त हो जाएगा। मेरा साथ कभी मत छोड़ना।”

बूंदों ने कहा, “हमने कभी भी तुम्हारा साथ नहीं छोड़ा। तुम ने जिस तरह नदी का साथ छोड़कर गलती की, उस भूल का परिणाम तो तुम्हें भुगतना ही होगा। तुम ने हम निर्मल बूंदों का जीवन खराब कर दिया। तुम्हारे आलस के कारण हम कहीं की नहीं रहीं। अब हमारा बचना मुश्किल है। बिना सोचे-समझे पोखर में जाकर रुकने का तुम्हारा निर्णय हमारे लिए मृत्यु समान साबित हुआ। अगर तुम भी अन्य जल धाराओं की तरह संघर्ष के पथ पर आगे बढ़ जातीं तो हमारा जीवन भी सार्थक हो जाता।” ✪

अपने लेखक को जानिए

भगवत प्रसाद पाण्डेय : प्रकृति, संस्कृति और परंपराओं से खास लगाव। उत्तराखण्ड सरकार के राजस्व विभाग में वरिष्ठ प्रशासनिक अधिकारी। विगत 35 वर्ष से लेखन। बाल साहित्य के साथ ही विभिन्न आलेख, कहानी, व्यंग्य और कविताएं प्रतिष्ठित पत्र-पत्रिकाओं में प्रकाशित।

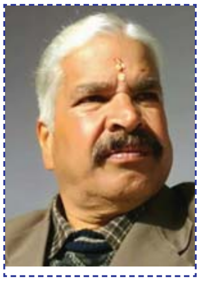

कॉन्टैक्ट लैंस की कहानी

अपने लेखक को जानिए

ओमप्रकाश क्षत्रिय 'प्रकाश' : आठ भाषा में 1128 अंकों में प्रकाशित बाल कहानियों के रचनाकार। शिक्षा विभाग मप्र में पेशे से सहायक शिक्षक। 36 सालों से बच्चों के बीच शिक्षण। कई पुस्तकें प्रकाशित हैं।

राधा ने दोनों आंखों में से दो पारदर्शी कांच निकालकर एक द्रव से भरे डिब्बे में रख दिए। राहुल ने देखा कि वे कांच उसे नजदीक बुला रहे थे।

"तुम हमें जानते हो?"

"नहीं।"

"हमारा नाम कांटेक्ट लैंस है।"

"यह क्या होता है?"

"आंखों में रखा जाने वाला चश्मा है।"

"यानी चश्मा भी आंखों में रखा जाता है?" राहुल ने पूछा।

"हां। इसीलिए तो हमें कांटेक्ट लैंस नाम दिया गया है।"

" तुम्हारा जन्मदाता कौन था?"

"मेरे जन्मदाता दो वैज्ञानिक थे। एक युजेनफिक थे और दूसरे अगस्त मूलर थे। उन्होंने मुझे 1888 में बनाया था। मगर मुझे बनाने का विचार सर्वप्रथम 1508 में लियोनार्डो द विंसी के दिमाग की उपज था।" कांटेक्ट लैंस ने बताया।

"तुम्हें आंखों में कब से लगाया जाने लगा?"

"सन 1888 से। मेरा जन्म सन 1636 में ही हो चुका था।"

क्या तुम जन्म के समय से ही ऐसे थे?"

"नहीं।" कांटेक्ट लैंस ने कहा, "1937 में अमेरिका के वैज्ञानिक विलियम फेन ने मुझे प्लास्टिक का बनाया था। उसे स्केलेरस लैंस कहा गया था। यानी मैं स्केलरा : (श्वेत-

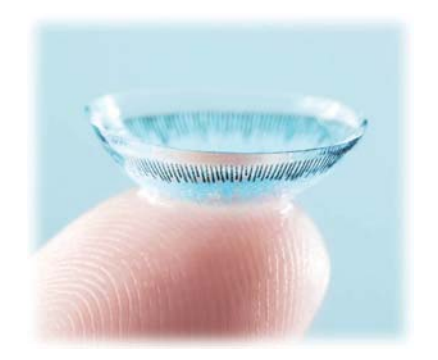

पटल) तक फैला होता था। पर यह सफल नहीं हुआ क्योंकि मुझे पहनने वाला पलक नहीं झपका सकता था।"

"तुम्हें पहले भी इतना ही पतला बनाया जाता था?"

"नहीं। हमें बाद में पतला किया गया। जब हमें पाली मिथाइल मैथएक्राइलेट नामक रसायन से बनाया जाने लगा, उस वक्त हम हर नंबर में मिलने लगे थे।"

"तुम्हें लगाने से आंखों में चुभन नहीं होती है?"

"पहले होती थी। जब लैंस सख्त होते थे। इन्हें कार्निकल कांटेक्ट लैंस कहते हैं।"

"मतलब यह है कि तुम कई तरह के होते हो?"

"नहीं। कोमल लैंस, कोमल यानी मुलायम होते हैं। इससे आंखों में चुभन नहीं होती है। कुछ लोगों को कठोर लैंस आंखों में अच्छे बैठते हैं। इस तरह मुलायम और कठोर लैंस के बीच का लैंस कोमल होता है।"

"मगर तुमने यह तो नहीं बताया कि आंखों में तुम चिपके कैसे रहते हो? और काम क्या करते हो?" राहुल ने पूछा।

"आंखों की बरौनियों पर द्रव और तेल निकलता है। उसी पर हम चिपक जाते हैं। हम वही काम करते हैं, जो चश्मा करता है। यानी नजर ठीक करते हैं। ताकि मनुष्य को वस्तुएं साफ दिखाई दें।" यह कहते हुए लैंस चुप हो गया।

अपने लेखक को जानिए

अंजना गर्ग : लिखने मे रुचि । साहित्य में प्रसाद, निराला, बच्चन, महादेवी वर्मा आदि की रचनाएं पढ़ना पसंद। विभिन्न पत्र पत्रिकाओं में कविताएं एवं लेख प्रकाशित ।

रंग भरी होली

रंगो का त्योहार है होली
फागुन का शृंगार है होली,
भक्त का विश्वास है होली
अहंकार का नाश है होली।

घर घर महका व्यंजनों से
गुजिया मठरी खजलों से,
रंग भी सज कर आये हैं
पिचकारी गुब्बारे संग लाये हैं।

चिंकी-पिंकी भी तो हरषाये
फेणी गुजिया खाने जो भाये,
रंगों के देखो बादल सजाये
इधर बरसाये, कभी उधर बरसाये

चुनिया मुनिया सब गा रही
रंगों में खुद को भिगा रही,
घूम रही हैं कई टोलियां
संग साथ ले हमजोलियां।

होली पर्व है प्रीत का
भुला वैमनस्य की रीत का,
आओ सब मिल रंग लगायें
घृणा,मतभेदों को दूर भगायें।

चित्र : नंदा कुमार शेनॉय

गांव की होली

बाबू की ख़ुशी का ठिकाना नहीं था। गांव से उसके बाबा का फोन आया था। बाबा चाहते थे कि बाबू गांव में पूरे परिवार के साथ होली मनाए।

होली तो बाबू का प्रिय त्योहार था। उसे शहर गए एक वर्ष हो चुका था। गांव की पाठशाला से उसने छठी की परीक्षा पास की थी। पूरे जिले में वह प्रथम स्थान पर था। इसी बात से खुश होकर उसके चाचा उसे अपने साथ शहर ले गए थे। गांव में छठी तक ही स्कूल था। आगे की पढ़ाई के लिए दूर के गांव में ही एक स्कूल था।

शहर में चाचा ने उसका दाखिला एक स्कूल में करवा दिया। चाचा दिन भर अपने काम पर रहते। चाची ही घर पर होतीं। उनका व्यवहार

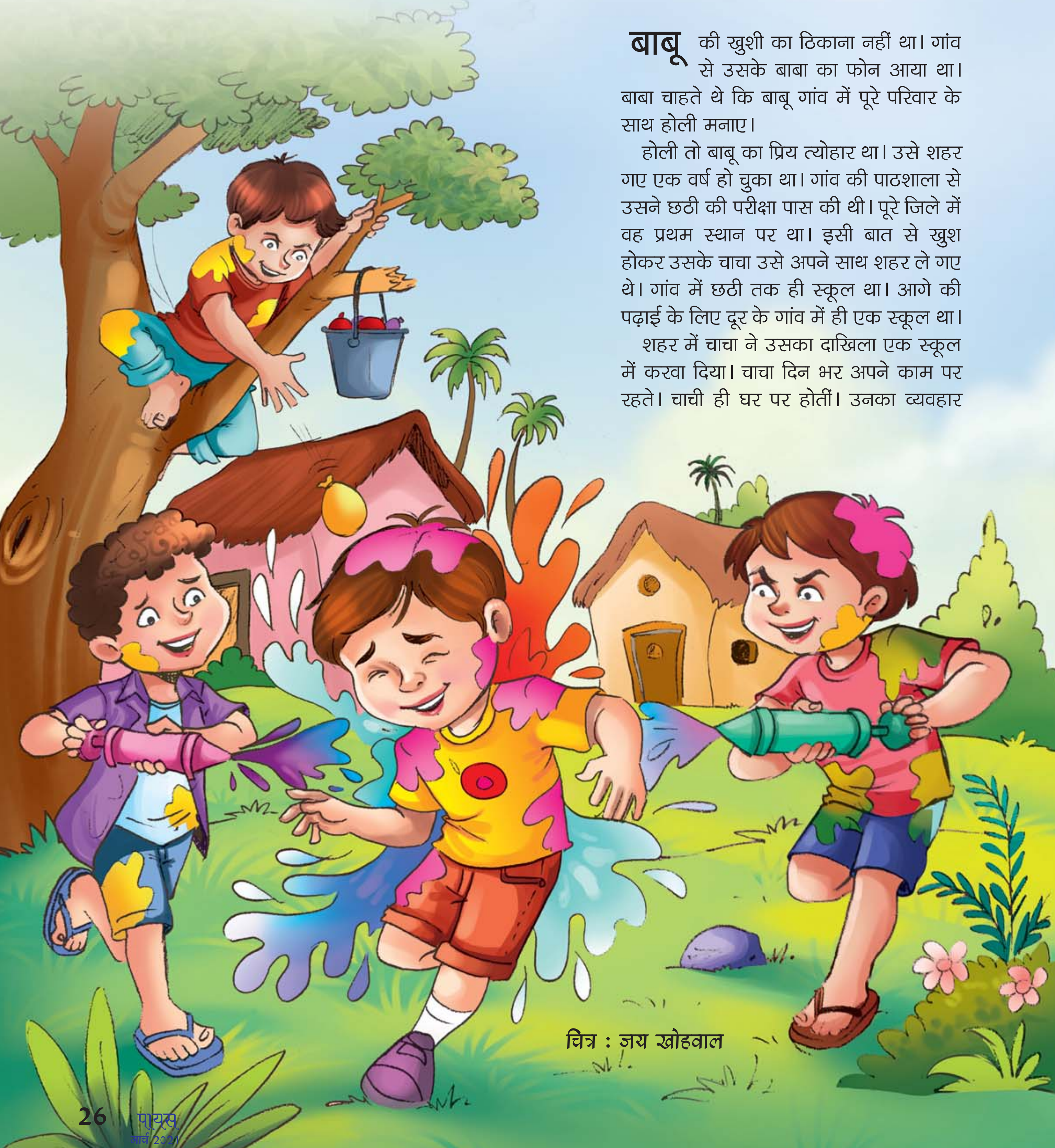

चित्र : जय खोहवाल

बाबू के साथ अच्छा नहीं था। अपने बेटे, डब्बू को वह खूब लाड़ करती, लेकिन बाबू को एक नौकर से अधिक नहीं समझती। घर के काम उससे करवातीं। खाना भी सबके खाने के बाद ही देती। डब्बू भी गंवार कहकर उसे चिढ़ाता रहता था।

चाचा का फ्लैट दो कमरों वाला था। एक कमरे में डब्बू पढ़ाई करता और दूसरे कमरे में चाचा-चाची सोते। बाबू के लिए न तो पढ़ने की जगह निश्चित थी, न ही सोने की। दिन में बालकनी में बैठकर पढ़ाई करता और रात में सबके सोने के बाद लॉबी में सोफे पर ही सो जाता। अक्सर रात में बाबू अपने मां-बाबा को याद करके रोता रहता परंतु किसी से कुछ नहीं कहता।

बाबा का बुलावा आया, तो उसकी जान में जान आई। डब्बू गांव नहीं जाना चाहता था, किंतु चाचा ने उसे जाने के लिए मना लिया। चाची को भी मजबूर होकर चलना ही पड़ा।

होली से एक दिन पहले सुबह होली पूजन हुआ और शाम को होलिका दहन। डब्बू गांव में किसी से अधिक परिचित नहीं था, इसलिए बाबू के साथ-साथ ही घूम रहा था। बाबू के साथ वह पहले कभी इतने समय तक नहीं रहा था। अपने घर में भी नहीं। बाबू ने अपने सभी दोस्तों से उसका परिचय कराया। सभी उसके साथ खेल रहे थे। सबने मिलकर अगले दिन का कार्यक्रम निर्धारित किया। फाग पर गुलाल और रंग वाली होली खेलने की गुपचुप योजना बनाई गई। डब्बू को सब समझ नहीं आया, लेकिन वह खुश था।

सुबह डब्बू सोकर उठा, तो बाबू घर में नहीं था। डब्बू उसे ढूंढ़ते हुए घर से बाहर गया, तो किसी को पहचान नहीं पाया। सबके चेहरे रंग से पुते हुए थे। बाबू को तो पहचानना मुश्किल था। डब्बू जब तक पहचान पाता, तब तक उसके ऊपर रंगों की बारिश होने लगी। वह भी उनकी तरह रंग से नहा गया। पहचानना मुश्किल था कि कौन बाबू है और कौन डब्बू। दोपहर तक जमकर सबने होली खेली। खूब धमाल मचाया। डब्बू ने पहली बार ऐसी होली देखी थी। वह जिस शहर में रहता था, वहां होली कोई ठीक से खेलता ही नहीं था। बारह बजे के बाद जब सबके रंग खत्म हो गए, तो बच्चे अपने-अपने घर वापस चले गए।

डब्बू और बाबू भी घर लौट आए। खूब मल-मलकर नहाए। नहाकर बच्चे पकवान पर टूट पड़े। होली पर विशेष पकवान बनाए गए थे। परिवार के सब लोग मिलकर त्योहार का आनंद ले रहे थे। तभी चाची बोली, "बाबू अब अपना सामान भी समेट लेना, कल सुबह जाना भी है।"

बाबू जाकर मां से लिपट गया। "नहीं जाऊंगा मां।" उसने दृढ़ता से कहा। कोई कुछ कहता, उससे पहले ही चाची शुरू हो गई, "यहां गांव में रहोगे, तो अपने उन गंवार दोस्तों के साथ ही घूमते रह जाओगे। तुम पढ़-लिखकर कुछ न कुछ बन ही जाओगे शहर में।"

बाबू ने डब्बू को देखा और फिर चाची की बात का जवाब दिया, "चाची, शहर जाकर एक घरेलू नौकर बनने से कहीं अच्छा है, गंवार बने रहना। मेरे दोस्त गांव में रहते हैं, लेकिन इंसानियत जानते हैं। अपने रिश्तेदारों को नौकर नहीं मानते हैं।"

बाबू और भी बहुत कुछ बोलना चाहता था किंतु बाबा ने उसे रोक दिया। चाची नाराज होकर अंदर चली गईं। डब्बू बाबू के पास आकर बोला, "मैं अपने और मां के व्यवहार के लिए तुमसे माफी मांगता हूं भाई। इस बार मैं तुम्हें अपने कमरे में ही रखूंगा। मैं जान गया हूं, तुम कितने अच्छे हो। बस जिद छोड़ दो और मेरे साथ चलो।"

बाबू ने डब्बू को गले से लगा लिया और बोला, "मैं तुम्हारा अगली होली पर अपने गांव में ही इंतजार करूंगा। फिर से मस्ती करेंगे। मेरे भाई, मैं वहां अब नहीं जाऊंगा। नहीं पढ़ पाया, तो खेती करूंगा, पर एक इनसान बनूंगा।" बाबू ने डब्बू को समझाते हुए कहा।

मां, बाबा उसकी बात से सहमत थे। चाचा सिर झुकाए खड़े थे। चाची मुंह फुलाकर बैठी थी। तभी डब्बू ने बाबू का हाथ खींचते हुए कहा, "बाबू अभी तो खेल लेते हैं। कल तो मुझे फिर से वीडियो गेम ही खेलना पड़ेगा।"

बाबू ने उसका हाथ पकड़ लिया। दोनों फिर दोस्तों के पास चले गए।

अपने लेखक को जानिए

अर्चना त्यागी : मुजफ्फरनगर (उत्तर प्रदेश) में जन्म, वर्तमान में राजस्थान में निवास। रसायन विज्ञान व्याख्याता एवं कैरियर परामर्शदाता। वूमन ऑफ ऑनर अवॉर्ड, बेस्ट टीचर, बेस्ट कॉर्डिनेटर, बेस्ट मंच संचालक एवं कई साहित्यिक पुरस्कार। विभिन्न समाचार पत्रों और पत्रिकाओं में नियमित प्रकाशन

स्पन्दन या छोटा भीम

अपने लेखक को जानिए

संगीता सेठी : प्रशासनिक अधिकारी (भारतीय जीवन बीमा निगम) गर्ल गाइड का राष्ट्रपति पुरस्कार। 14 पुस्तकें प्रकाशित बच्चों को कहानी कहने की कला। अंतराष्ट्रीय बाल साहित्य मेलों में शिरकत। दैनिक भास्कर रचना पर्व में कहानी 'कांधा' को प्रथम पुरस्कार। दैनिक भास्कर वीमेन ऑफ द ईयर 2012। अनेक संस्थाओं से पुरस्कार। उड़िया मलयाली उर्दू में रचनाएं अनूदित। 5वीं कक्षा के पाठ्यक्रम में एक कहानी सम्मिलित।

आज स्पन्दन बहुत खुश था। उसके पापा-मम्मी उसे पब्लिक पार्क जो ले जा रहे थे। वहां बहुत सारे झूले हैं। गोल चकरी, फिसलन पटटी और सी-सा भी। और हां, एक टॉय ट्रेन भी है, जो पूरे पार्क का चक्कर लगाती है।

पापा ने मोटर साइकिल निकाली। स्पन्दन फुदककर गेट से बाहर आ गया। मम्मी पीछे उस भीमकाय गेट को बंद करने की कोशिश करने लगीं। पहले उसे ठेलने में जोर लगाया। कपाट पास में आए तो, पर अच्छी तरह जुड़े ही नहीं। मम्मी ने जोर लगाया, तो नीचे की दो सिटकनियां आगे-पीछे हुईं। कपाट बराबर मिल गए। मम्मी ने काली सुनहरे पेंट की हुई चखरीनुमा मूठ को घुमाया और गेट बंद हो गया।

पापा किक लगाकर मोटर-साइकिल स्टार्ट कर चुके थे। स्पन्दन आगे बैठ चुका था। मम्मी भी उचककर बैठ गईं। मोटरसाइकिल हवा से बातें करने लगी और स्पन्दन पापा से।

"पापा! मैं भीम वाला खिलौना लूंगा।"

"हां! जरूर लेंगे।" पापा हेलमेट के शीशे को सरकाकर बोले।

"पापा मैं भी छोटा भीम हूं...।" नन्हा स्पन्दन पार्क में जाने की खुशी से चहक रहा था।

"इस छोटे भीम ने तो बच्चों को बिगाड़ रखा है...।" इस बार मम्मी पापा के कान के पास आकर बोली।

"स्पन्दन को अच्छा लगता है, तो हम क्या करें...?" पापा ने बेवजह जोर से होर्न बजाया ।

हवा का रुख सामने से पीछे होने के कारण स्पन्दन की बातें पापा को सुनाई दे रही थी पर मम्मी की बातें स्पन्दन को सुनाई नहीं दे रही थी वरना वह हमेशा की तरह कह देता, 'मैं आपका बेटा नहीं हूं।'

पब्लिक पार्क आ गया। पापा ने मोटर-साइकिल पार्किंग में खड़ी की। स्पन्दन भागकर उस गोलचक्कर वाले गेट से घूमकर अंदर गया। मम्मी ने टॉय ट्रेन की टिकट लेकर पर्स में रख ली। स्पन्दन ने बारी-बारी से झूले लिए। पहले गोल चक्करी, फिर फिसलन पट्‌टी, फिर सी-सा। पूरे पार्क में एक बार मम्मी के साथ पकड़म-पकड़ाई खेलकर वे उधर बढ़े, जहां टॉय-ट्रेन उनका इंतजार कर रही थी। टॉय-ट्रेन में खिड़की वाली सीट स्पन्दन की पसंद रही है। मम्मी-पापा के साथ टॉय ट्रेन में बैठकर स्पन्दन ने टॉय ट्रेन का लुत्फ उठाया। फिर वे स्टेशन पर उतरे, तो बर्फ का गोला खाया। चुस्कियां लेते हुए स्पन्दन मोटर-साइकिल पर बैठा, तो सामने छोटे भीम का गुब्बारेनुमा खिलौना दिख गया। स्पन्दन मचलकर मोटर साइकिल से उतरा और खिलौने वाले की तरफ बढ़ गया।

"यह स्पन्दन भी ना..., हर चीज लेगा।" मम्मी झल्लाईं।

"नहीं तो क्या, मैं लूंगा यह खिलौना,...लेने दो ना...।" पापा ने हंसकर कहा ।

स्पन्दन खिलौना लेकर उछल पड़ा, "मैं भी छोटा भीम हूं।"

घूम-फिरकर सब वापस घर पहुंचे। मम्मी मोटर-साइकिल से उतरीं। गेट की मूठ घुमाई। गेट ठेला। पर ये क्या ...? गेट तो खुला ही नहीं। पापा ने स्पन्दन को मोटर साइकिल से उतारा। उसने भी बाहर कर नन्हे हाथों से गेट को ठेला, पर सब बेकार रहा। पापा मोटर साइकिल को स्टैंड पर लगाकर गेट तक आए। गेट को जोर से धक्का दिया। पर गेट नहीं खुला।

"ओहो, यह तो अंदर से बंद हो गया है।" पापा सोच में पड़कर बोले।

"हां! पहले भी हुआ था। पर तब तो दादी मां घर पर थीं। उन्होंने खोल दिया था।" स्पन्दन को याद आया।

इसकी दोनों सिटकनियां नीचे फर्श में बने छेद में सरक गई हैं। अब क्या करें।" मम्मी अपनी गलती महसूस कर रही थीं क्योंकि उन्होंने ही जाते समय गेट को जोर से बंद किया था। इस कारण सिटकनियां हिलकर नीचे आ गईं और जमीन में बने छेद में धंस गई थीं।

चित्र : सुशील दोषी

रात के दस बजे थे। पड़ोस के मनदीप अंकल के घर भी ताला लगा हुआ था। पापा इतनी ऊंची दीवार कैसे कूदें? मम्मी ने चप्पल उतारी, जैसे दीवार कूद ही पड़ेगी। तब पापा को नन्हे स्पन्दन का ध्यान आया। पापा ने उसे गोद में लिया और रेलिंग के पार जाने को कहा।

स्पन्दन पहले तो झिझका, फिर पापा ने उसके कान में धीरे से कहा, "अरे! तू तो भीम है...।"

स्पन्दन ने फुर्ती से अपना एक पैर रेलिंग के दूसरी तरफ डाल दिया। पापा ने कहा, "तू चिंता मत कर, मैंने तुझे पकड़ा हुआ है।" और स्पन्दन ने दूसरा पैर भी रेलिंग के दूसरी तरफ डाल दिया ।

पापा ने रेलिंग के बीच हाथ डालकर स्पन्दन को दीवार से नीचे सरकाना शुरू किया। पहले कमर से पकड़ा फिर कंधों से....फिर पकड़ ढीली करते हुए छोड़ दिया।

अब स्पन्दन दूसरी तरफ आ चुका था। वह दरवाजे की तरफ भागा और बोला, "कैसे खोलूं पापा।"

मम्मी गेट के पास बैठ गईं। अपना हाथ गेट के नीचे से डालकर सिटकनी को छुआ, "तू इसे घुमाकर ऊपर कर स्पन्दन!"

स्पन्दन ने प्रयास किया और गेट खुल गया। स्पन्दन ने मम्मी-पापा का स्वागत करते हुए कहा, "लो, छोटा भीम ने खोल दिया गेट।"

मम्मी के हाथ में, छोटा भीम वाला खिलौना था। उसे स्पन्दन की ओर बढा दिया।

"हां! तू सचमुच मेरा छोटा भीम है।" मम्मी ने उसे गले से लगा लिया।

और वे लौट आईं

अपने लेखक को जानिए

मनोहर चमोली 'मनु' : शिक्षक होने के साथ-साथ बाल साहित्य में सक्रिय। कई कहानियों का भारतीय सहित कई विदेशी भाषाओं में अनुवाद हुआ है। कई पाठ्य पुस्तकों में कहानियां शामिल हैं। शिक्षा और साहित्य में आलोचना के लिए जाने जाते हैं। बीस से अधिक पुस्तकें प्रकाशित हैं।

"**हम** कब बाहर जाएंगे?" नन्ही चींटी ने मां से पूछा। मां ने जवाब दिया, "अभी नहीं।"

चींटा बोला, "बच्चो, बाहर की दुनिया ही अलग है। बहुत बड़ी है। वहां हरियाली है, रोशनी है, जल है। कई बैरी भी हैं।"

एक नन्ही चींटी ने पूछा, "बैरी?"

मां बीच में बोल पड़ीं, "सब समझ जाओगे। अभी हमारा दल खाने का सामान लेने जा रहा है। तुम सब यहीं रहना।" नन्ही चींटियां अंधेरे में ही दुबक गईं।

एक सुबह चींटियों का दल भोजन की तलाश में बाहर निकला। चींटियों के बच्चों ने भी बाहर जाने का मन बना लिया था। कुछ देर बाद वे भी कतार में बाहर निकल आईं। भीतर तो अंधेरा था। वे आज पहली बार बाहर आई थीं। वे सभी उजाला देखकर घबरा गईं। सबसे आगे चल रही नन्ही चींटी बोली, "मां ने बताया तो था। धरती के ऊपर सूरज की रोशनी मिलेगी। ये वही है। आओ।"

वे चलती गईं। एक बार फिर वे चलते-चलते ठहर गईं। कतार में सबसे पीछे चल रही चींटी ने पूछा, "अब क्या हुआ? कोई बैरी तो सामने नहीं है?"

किसी ने जवाब दिया, "अचानक अंधेरा हो गया है!"

हर कोई सिर उठाकर यहां-वहां देख रहा था। किसी ने लंबी सांस लेते हुए कहा, "अरे! ये तो कोई पेड़ है। हम उसके सामने आ गए हैं। हमें रास्ता बदलना होगा।"

एक चींटी बोली,"प्यास लग रही है।" पेड़ पर एक मकड़ी थी। उसने कहा,"तालाब बहुत दूर है। लगातार चलोगे तो भी तीन दिन बाद ही पहुंचोगे।"

यह सुनकर चींटियां परेशान हो गईं। एक ने पूछा,"अब क्या होगा?"

मकड़ी ने हौसला बढ़ाया, "किसी तरह सुबह तक रुको। मैं तुम्हारी प्यास बुझाऊंगी।"

एक मक्खी बोली, "घबराओ नहीं। ऐसा करो। पेड़ की जड़ में चली जाओ। सुबह तक आराम करो।" नन्ही चींटियों के दल ने कतार तोड़ दी। वे पेड़ की जड़ों के बीच में बची जगह के भीतर चली गईं।

सुबह हुई। मकड़ी का जाला ओस से लदा हुआ था। मकड़ी ने आवाज लगाई, "अरे बच्चो। उठो, आओ। अपनी प्यास बुझाओ।"

चींटियां जाले की ओर चल पड़ीं। सबने अपनी प्यास बुझाई।

मकड़ी से विदा लेकर चींटियां लौटने लगीं। चलते-चलते वापस अपने बिल के पास पहुंच गईं।

बिल के पास चींटियों का दल उन्हें खोज रहा था। बच्चों को कतार में लौटता देख चींटियां खुश हो गईं। नन्ही चींटियां दौड़कर बड़ों से लिपट गईं। ✪

मल दिया गुलाल

काला चींटा, चींटी लाल ,
खेल रहे हैं रंग गुलाल।

ले पिचकारी चींटा दौड़ा
चींटी रानी करे धमाल।

पकड़ के चींटा की मूंछों को
चींटी ने मल दिया गुलाल।

काला चींटा लाल हो गया
जैसे पका टमाटर लाल।

फागुन की मस्ती छाई थी
दिखा मिठाई का फिर थाल।

बोली चींटी बहुत हो गया
चलो सफाचट कर दें थाल।

खाई मिठाई मिली थी भांग
बदल गई दोनों की चाल।

पहन के घुंघरू चींटा नाचे
चींटी ओढ़े चुनरी लाल।

डाल गले में बांह नाच रहे
भूले बीता हुआ मलाल।

काला चींटा चींटी लाल
खेल रहे हैं रंग गुलाल।

डॉ. सुधा गुप्ता 'अमृता'

चित्र : नंदा कुमार शेनॉय

एक बनाते

होली के दिन मस्ती में,
ढोल बजाता डबलू।
नीला, पीला मुंह करके,
दिखा रहा है बबलू।

फोन अजब है चिंटू का,
रंग फेंकता काला।
काले रंग में डूब कर,
भूत बना है लाला।

तम्बू जैसी कमीज में,
छिपा रखी पिचकारी।
टिल्लो रानी भिगो रही,
सब को बारी-बारी।

नये-नये हुड़दंगों से,
बच्चे होली खेलें।
सबको ही एक बनाते,
ये रंगों के मेले।

हर प्रसाद रोशन

मिलकर खाओ

रसगुल्ले का भोग लगाओ ,
जीवन में खुशहाली लाओ।
कड़क जलेबी मिल जाए तो,
रबड़ी के संग उसको खाओ।

मन में खुशी जगाते पेड़े,
खाना हो तो मथुरा जाओ।

सुनो आगरे वाला पेठा,
अगर मिले तो जल्दी लाओ।

पटना का खाजा मस्ताना,
उसको खाकर खुशी लुटाना।
होली आई खुशी मनाओ,
सभी मिठाई मिलकर खाओ।

महेंद्र कुमार वर्मा

अपने लेखक को जानिए

हर प्रसाद रोशन : वर्तमान में स्थानीय निकाय, हल्द्वानी में कार्यरत। विगत 26 वर्षो से लेखन कार्य में सक्रिय। बाल साहित्य में बाल कविताएं, बाल कहानियां, गीत,भजन आदि का लेखन।

अपने लेखक को जानिए

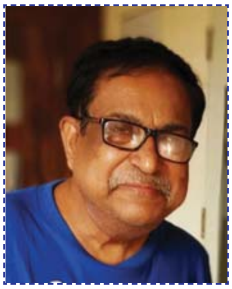

महेंद्र कुमार वर्मा : भारतीत स्टेट बैंक से अवकाश प्राप्त अधिकारी। बाल पत्र पत्रिकाओं में चालीस वर्षों से सतत प्रकाशन। बाल साहित्य में कविता,कहानी,काव्य आदि देश की प्रमुख पत्रिकाओं में प्रकाशित।

जंगल में फाग

जंगल में इक धूम मची है,
आया है फागुन का मास,
फाग खेलने चले जानवर
हिलमिल आज रचाने रास।

फूल-फूल से रंग चुराकर
घोल रही तितली रानी,
हथिनी पर भर-भर पिचकारी
हाथी ने की मनमानी।

रंगा सियार चला इठलाता
खरहा लाया लाल गुलाल,
मला शेरनी के गालों पर
चुपके से कर दिया कमाल।

नाचें, गाएं, उछले, कूदें
करें ठिठोली और हुड़दंग,
जंगल की यह होली देखी
भैया हम तो रह गए दंग।

डॉ. कृष्णा कुमारी

आई रे होली

तरह-तरह की लें पिचकारी,
ताक-धिना-धिन नाचें गाएं।
रंग-रंगीली मोहक टोली ,
आओ मिल-जुल करें ठिठोली।

गालों पर गुलाल लगाएं
इक दूजे से हाथ मिलाएं,
रंग प्यार का यूं बरसा दें,
भर जाए खुशियों से झोली।

भूल-भूलाकर भेदभाव को
मस्ती का त्योहार मनाएं,
बैर भाव को करें किनारा,
मुख से बोलें सुन्दर बोली।

प्रमोद सोनवानी पुष्प

सभी चित्र : सुशील दोषी

अपने लेखक को जानिए

डॉ. कृष्णा कुमारी : बाल गीत सहित विभिन्न विधाओं में 10 पुस्तकें प्रकाशित। पत्र-पत्रिकाओं में हजारों रचनाएं प्रकाशित। रेडियो, दूरदर्शन पर निरन्तर प्रसारण।

अपने लेखक को जानिए

प्रमोद सोनवानी पुष्प : स्वतंत्र साहित्यकार व पत्रकार । नन्हे सम्राट, नई दिल्ली तथा नवभारत, बिलासपुर (छ.ग.) द्वारा 'श्रेष्ठ बाल काव्य पुरस्कार', तीन बाल काव्य संग्रह प्रकाशित।

कहानी

ईलू नगर की इल्लियां

चित्र : सुशील दोषी

हरित वन में एक ईलू नगर था, जहां तरह-तरह के पेड़- पौधे थे। उनमें विभिन्न प्रकार की इल्लियां निवास करती थीं, छोटी-बड़ी, मोटी-पतली, रंग-बिरंगी' सारी इल्लियां आपस में ईलू-ईलू करती रहती थीं, यानी प्यार से रहती थीं।

इन्हीं इल्लियों में एक थी एकदम सफेद, खरगोश की तरह उसके रोएं भी थे। उसकी आंखें गोल-गोल और काली-काली थीं। वह सारी इल्लियों में निराली और मतवाली थी। नाम था उसका छबीली।

छबीली जरा नकचढ़ी थी। बात-बात पर अपने गोरे रंग पर इठलाती फिरती। किसी से सीधे मुंह बात तक ना करती। सारी इल्लियां हरे-हरे पत्तों पर झूलतीं। कभी-कभी तो अपने स्पंजी शरीर के कारण झूलते-झूलते जड़ों तक आ जातीं। फिर चढ़कर पत्तों पर खिलखिलाने लगतीं।

फागुन का महीना आ गया था। वन में अनोखी छटा बिखर रही थी। इल्लियां इतराती, इठलाती अपने रंगों से मेल खाते फल-फूलों के पत्तों को चट करने में लुढ़करही थीं। इल्लियों की तरह रंग-बिरंगी तितलियां भी फूलों पर मंडराने लगी थीं। पलाश के पेड़ों पर तो पत्ते कम

और फूल ज्यादा दिखाई दे रहे थे।

इधर गोरी छबीली इल्ली नारंगी पलाश के फूलों के बीच एक पत्ते पर बैठी होली गीत गुनगुना रही थी। तभी सजीली तितली, जो कई रंगों की थी, अपने पंखों को फड़फड़ाती हुई छबीली के पास आकर बैठ गई। छबीली बोली, "अरे हटो-हटो, मेरे गोरे रंग को गंदा मत कर देना।"

सजीली बोली, "तुम्हें अपने गोरे रंग पर इतना घमंड है, तो फागुन का रंगीला गीत क्यों गा रही हो?"

छबीली बोली, "गीत गाना और बात है। जाओ उन रंगीन इल्लियों के पास। तुम्हारी-मेरी क्या बराबरी?" छबीली पलाश के फूलों में छिप गई।

पलाश को छबीली का यह व्यवहार अच्छा नहीं लगा। पलाश ने आवाज लगाई, "सुनो - सुनो सजीली। छबीली को अपने सफेद गोरे रंग पर बहुत घमंड है। क्यों न उसे रंगों का महत्व समझा दिया जाए? रंग न होते तो यह दुनिया कितनी अजीब होती! होली आ रही है। प्लान किया जाए कि जितनी भी रंगीन इल्लियां हैं ना, वे सभी हमारा साथ देंगीं, क्योंकि इस नकचढ़ी के व्यवहार से सभी दुखी हैं। एक मैं ही हूं, जो उसका साथ देता हूं। लेकिन अब बहुत हुआ, क्यों ना अबकी होली में उसे रंगों में डुबो दिया जाए, ताकि यह भी अन्य इल्लियों की तरह दिखने लगे।"

सजीली ने कहा, लेकिन रंग कहां से लाएंगे?"

"अरे मैं हूं ना। मैं तो फागुन में होली के रंगों के लिए ही खिलता हूं। मेरे रंग से इस छबीली का क्या, किसी को भी नुकसान न होगा।"

पास ही में खिला गुलाब तितली और पलाश की बात सुनकर मुसकराकर बोला, "मैं भी तुम्हारे रंग में अपनी खुशबू मिला दूंगा।" गुलाब, पलाश और सजीली तितली तीनों खुशी-खुशी रंग-बिरंगी इल्लियों को चुपचाप अपनी योजना बताने लगे।

पलाश ने अपने फूल झाड़ने शुरू किए। सरसराती हवा ने भी पलाश का साथ दिया। देखते ही देखते पलाश के फूल नीचे बने गड्ढे में बिछ गए। फूलों को देखकर बादल भी बहुत खुश हुए और खुशी से फूलों पर बरस गए।

छबीली पत्तों में छिपी पलाश के नीचे भरते रंग को देख रही थी। नारंगी रंग की छोटी सी तलैया बन गई थी, फूल तैर रहे थे, तितली मंडरा रही थी। छबीली ने पानी में झांक कर देखा, उसे अपनी परछाईं देखकर समझ में ही ना आया कि यह वही है। बादलों के भीतर से सूरज ने भी देखा, "वाह ! क्या सुंदर रंग तैयार हुआ है!" सारी इल्लियां होली खेलने के लिए फूल-पत्तों से निकलकर रंग तलैया के पास इकट्ठी हो गईं। पास लगी आम की बौर झूमने लगी, कोयल गीत गाने लगी। पलाश ने सजीली तितली को इशारा किया। सजीली ने अपने नरम पंखों से हौले से छबीली को रंग तलैया में धड़ाम से डुबो दिया।

सारी इल्लियां, गुलाब, पलाश, सजीली तितली सब एक साथ चिल्लाए, "होली है भई, होली है।"

छबीली पूरी तरह नारंगी हो चुकी थी। पूरा वातावरण रंगीन और सुगंधित था। कुछ पल के लिए छबीली अपनी बदन को देखती रही। इतना सुंदर वातावरण देखकर छबीली पर भी होली का रंग चढ़ ही गया। उसने इल्लियों को देखा, फिर खुद को देखकर खिलखिलाई और गीत गाने लगी, "फागुन आयो रे , रंग रंगीली होली लायो रे।"

छबीली ने पलाश और सजीली को धन्यवाद दिया, जिसने सारी इल्लियों से उसकी मित्रता करवाकर होली को आनंदमय बना दिया था। अब उसे रंग-बिरंगा संसार अच्छा लगने लगा। सूरज, बादल, हवा, गुलाब, तितली, कोयल सभी ने खूब तालियां बजाईं। ✪

अपने लेखक को जानिए

डॉ. सुधा गुप्ता 'अमृता' : राष्ट्रपति पुरस्कार प्राप्त सेवानिवृत शिक्षक। हिंदी साहित्य में गद्य, पद्य एवं बाल साहित्य में भी सभी विधाओं में लेखन। सभी विधाओं की करीब बीस पुस्तकें प्रकाशित। प्रादेशिक एवं राष्ट्रीय स्तर के करीब पचास सम्मान/पुरस्कार प्राप्त।

डब्बू की चतुराई
चित्र और परिकल्पना : पंकज राय
डब्बू गधे का सब मजाक उड़ाते थे। पर वह बड़ा समझदार था।
क्या सोच रहे हो डब्बू?
टुकटुक, मैं सुंदर दिखने के लिए ब्यूटी पार्लर जा रहा हूं। तू पिग्गू के साथ खेल ले।
कुछ ही देर में पिग्गू ढेर सारे गिफ्ट लेकर आ गया।
देखो, मुझे जन्मदिन पर कितने सारे गिफ्ट मिले हैं। आज हम जमकर खेलेंगे।
पिग्गू के हाथ में खिलौने देखकर कैटी भी आ पहुंचा।
इतने सारे खिलौने? आज खेलने में मजा आ जाएगा।
हां...
डब्बू कहां है?
डब्बू तो सुंदर दिखने के लिए ब्यूटू पार्लर गया है।

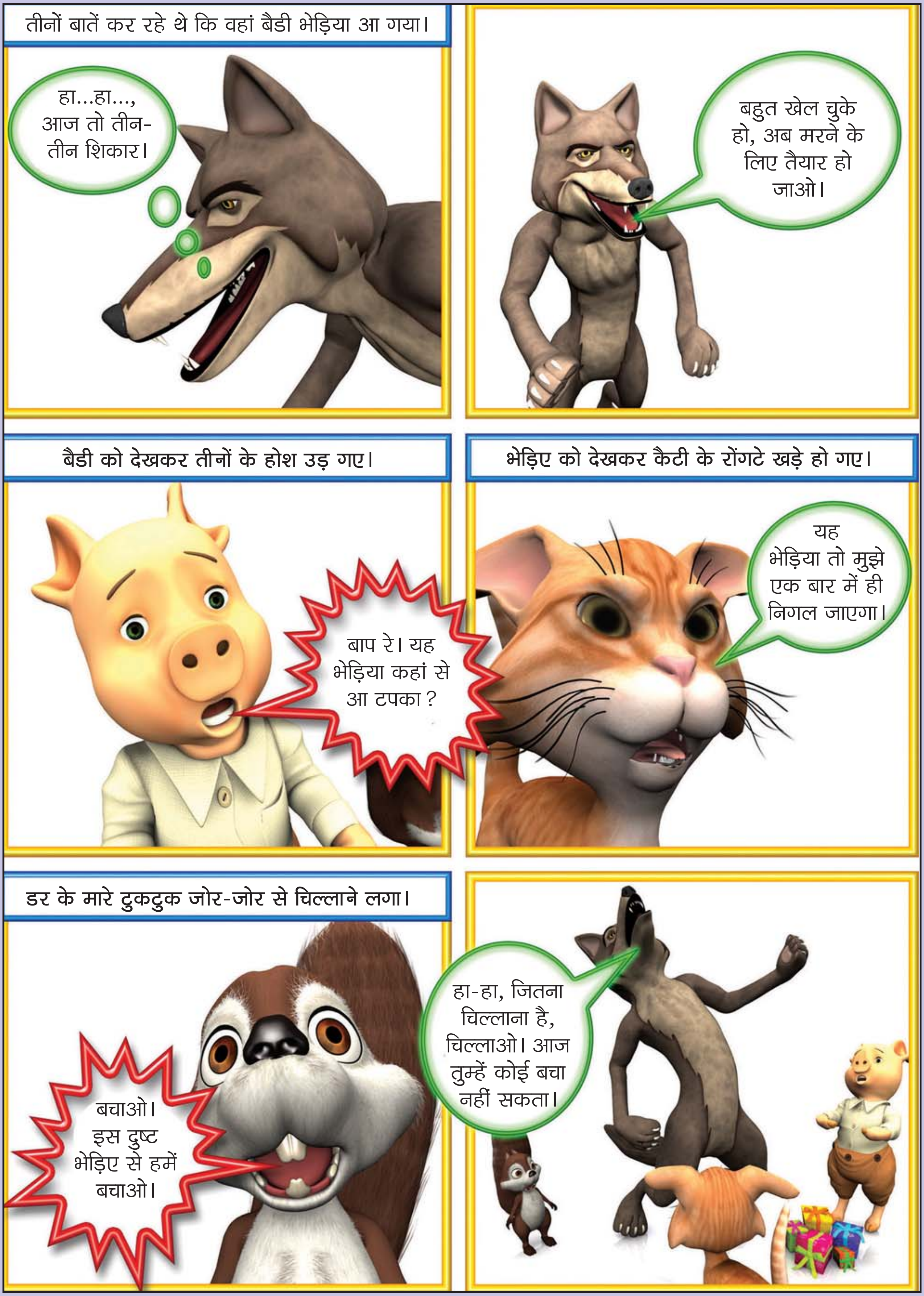
तीनों बातें कर रहे थे कि वहां बैडी भेड़िया आ गया।
हा...हा..., आज तो तीन-तीन शिकार।
बहुत खेल चुके हो, अब मरने के लिए तैयार हो जाओ।
बैडी को देखकर तीनों के होश उड़ गए।
बाप रे। यह भेड़िया कहां से आ टपका?
भेड़िए को देखकर कैटी के रोंगटे खड़े हो गए।
यह भेड़िया तो मुझे एक बार में ही निगल जाएगा।
डर के मारे टुकटुक जोर-जोर से चिल्लाने लगा।
बचाओ। इस दुष्ट भेड़िए से हमें बचाओ।
हा-हा, जितना चिल्लाना है, चिल्लाओ। आज तुम्हें कोई बचा नहीं सकता।

तभी वहां रंग-बिरंगे डब्बू को देख बैडी चौंक गया।
डब्बू गधा इतना सुंदर कैसे हो गया? मुझे भी सुंदर बनना है।
डब्बू ने बैडी को अपनी सुंदरता का राज बताया।
मैंने यह चमत्कारी लॉलापॉप खाया, तो सुंदर हो गया।
दुष्ट बैडी झट से डब्बू से लॉलीपॉप छीनकर खाने लगा।
आह। मर गया। मिर्ची से मेरी जीभ जल गई। पानी...
ही...,ही...
मिर्ची वाली लॉलीपॉप खाने से बैडी की जीभ चल गई। वह तीनों को छोड़कर पानी की तलाश में दौड़ पड़ा।
यार डब्बू, जान बचाने के लिए धन्यवाद। पर क्या लॉलीपॉप से सुंदर हो जाते है?
मैंने तो पार्लर में बॉडी पेंट कराई थी। पर जब मैंने तुम्हारी चीख सुनी, तो भेड़िया को मूर्ख बनाने के लिए लॉलीटॉप पर मिर्च डालकर ले आया। बाकी तो तुम्हें पता ही है। हा...,हा..., हा...

समुद्र की सतह पर तैरती ह्वेल फुहारा क्यों छोड़ती है?

आइवर यूशिएल

यह तो तुम जानते ही हो कि एक विशालकाय जलचर होने के बावजूद ह्वेल वास्तव में स्तन धारी प्राणी है। अतः जैसा कि स्वाभाविक है, यह फेफड़ों की मदद से सांस लेती है। तुम जो नहीं जानते होगे, शायद वह सिर्फ इतनी-सी बात कि ह्वेल के फेफड़े और इसकी श्वास-नलिका सीधी तौर पर उस नासिका मार्ग से जुड़ी होती है, जिसका बाहरी सिरा ब्लो होल के रूप उसके सिर के ऊपर स्थित होता है। इस पूरे श्वसन-तंत्र का मुंह से कोई सम्बंध नहीं रहता।

पानी में डुबकी लगाते समय ह्वेल अपने फेफड़ों को हवा से पूरी तरह भर लेती है और साथ ही ब्लो होल को कर लेती है बंद। चूंकि इसका पाचन-तंत्र बिल्कुल स्वतंत्र रूप से कार्य करता है, अतः समुद्र के अंदर भोजन ग्रहण करते समय, हम इंसानों की तरह, मुंह के रास्ते इसके फेफड़ों में पानी भर जाने का कोई खतरा नहीं रहता। ह्वेल के शरीर के अनुरूप इसके फेफड़े भी काफी बड़े आकार के होते हैं और इनमें ऐसी विशेषता वाली रक्तवाहिनियों का जाल फैला रहता है, जिनकी सहायता से फेफड़ों में मौजूद हवा के साथ मिली ऑक्सीजन का उपयोग बहुत ही धीमी गति से किया जाता है। अपने इसी गुण के आधार पर ह्वेल पानी के अंदर ही अंदर एक घंटे से भी अधिक का समय बिताने में सक्षम हो पाती है।

समुद्री जल की सतह के नीचे तैरते समय ह्वेल का शरीर फेफड़ों में भरी हवा को गर्म और नम कर देता है। जब इस हवा में मौजूद सारी ऑक्सीजन उपयोग में आकर खत्म हो जाती है, तो उसे पुनः पानी की सतह पर आना पड़ता है।

यहां पहले तो यह अपने ब्लो होल के रास्ते फेफड़ों में भरी सारी बासी हवा को बाहर फेंकती है और फिर इसके बदले में भरती है ताजी हवा। इस दौरान जब फेफड़ों में भरी बासी गर्म हवा बाहरी वातावरण की ठंडक के संपर्क में आती है, तो यह संघनित होकर भाप के एक फुहारे की शक्ल में दर्शनीय हो उठती है। ठीक उसी तरह जैसे बेहद ठंडे दिनों में हमारे मुंह से निकलने वाली सांस भाप का रूप ले लेती है। ✪

कजरी गई कहां

मोहन अपनी गायों को लेकर जंगल में पहुंचा ही था कि पश्चिम की ओर से आसमान में घने बादल उठते दिखे और कुछ ही देर में तेज बारिश शुरु हो गई।

मौसम के इस तरह अचानक बदलने का उसे जरा भी अनुमान नहीं था, वर्ना गायों के साथ वह इतनी दूर नहीं आता। असल में जंगल में नदी के पार खूब सारी हरी और नरम घास मिलती है। तभी तो शाम को लौटते समय गायें खूब छकी होतीं हैं, इसलिए गांव के ज्यादातर लोग अपनी गायें मोहन के साथ भेजते हैं।

मोहन पंद्रह-सोलह साल का है। पिता नहीं है, अकेली मां हैं, जो दूसरों के खेतों में गुड़ाई-कटाई जैसे काम करके कुछ कमा लेती हैं। मोहन को भी गायें चराने का अच्छा पैसा मिल जाता है। इस तरह मां-बेटे की जीविका अच्छी तरह चल जाती है।

उनके पास भी एक गाय है कजरी। मोहन कजरी को बहुत प्यार करता है, पर कजरी को मोहन की अम्मां से ज्यादा लगाव है। वह मोहन के हाथ से चारा खाती है, नहाती है, जंगल जाती है, पर दूध केवल अम्मां को ही देती है।

एक बार बड़ी मजेदार बात हुई।

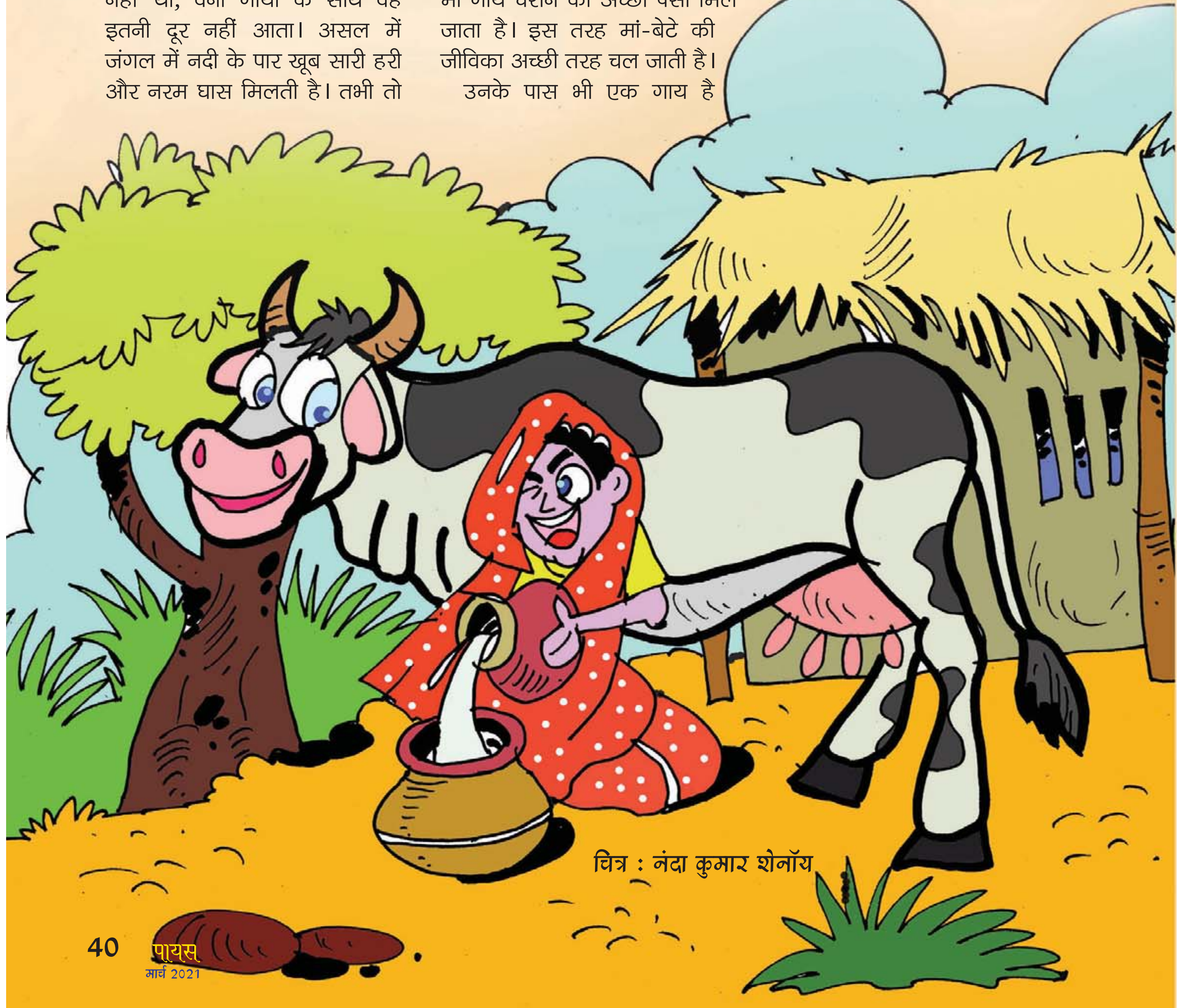

चित्र : नंदा कुमार शेनॉय

मोहन की मां को दो दिन के लिए अपने भाई के घर जाना पड़ा। तब सवाल यह खड़ा हुआ कि दूध कौन निकाले? कजरी किसी और को तो क्या, मोहन को भी हाथ नहीं लगाने दे रही थी। तब मोहन ने पड़ोसी की सलाह पर मां की साड़ी पहनी। मां की तरह माथे पर पल्ला किया, तब कहीं कजरी ने दूध दिया।

मोहन जितना कजरी से प्रेम करता है, उतना ही दूसरी गायों से करता है। मालिक की तरह देखभाल करता है। उनकी हर बात समझता है। गायें भी मोहन से हिली-मिली हैं, अपना नाम पुकारने पर तुरंत मोहन के पास आ जाती हैं।

उस दिन मोहन सचमुच मुसीबत में फंस गया। एक तो वह गांव से बहुत दूर जंगल के खूब अंदर पहुंच गया था, दूसरे जरा तेज वर्षा होने पर ही नदी में बाढ़ आ जाती है और गांव तक पहुंचने के लिए पुल वाले रास्ते जाना पड़ता है, जो बहुत चक्कर वाला है। पर मोहन घबराया नहीं, उसने एक बरगद के पेड़ के नीचे सारी गायों को इकट्ठा कर लिया और बारिश के बंद होने का इंतजार करने लगा।

पत्तों के झुरमुट में चिड़ियां गिलहरियां बूंदों से बचने की कोशिश कर रही थीं। बीच-बीच में गीले पंखों को फड़फड़ाकर सुखा रही थीं। सामने छोटी-छोटी जलधाराएं बह रही थीं और बौछारों में नहाते पेड़-पौधे बहुत खुश लग रहे थे। यह सब देखते हुए मोहन कुछ देर के लिए जैसे खो गया। चिड़ियों की चहचहाहट से उसकी तंद्रा टूटी।

'आहा, पानी बरसना बंद हो गया। इतने पानी से नदी के 'आने' (बाढ़) का खतरा भी नहीं है।' यह सोचकर उसने गायों को चरने छोड़ने से पहले गिना, गंगा, गोमती, नर्मदा, पारबती ...सब हैं पर कजरी..., पर कजरी कहां है?

"कजरी ओ कजरी।" मोहन ने पुकारा, पर वह नहीं आई।

अब मोहन ने कुछ और जोर से फिर पुकारा, पर कजरी की कोई आहट नहीं। मोहन को कुछ आशंका हुई। कजरी नीचे तलहटी में तो नहीं उतर गई। उधर लकड़बग्घा जैसे कुछ जंगली जानवर भी हैं जो सीधे तो गाय पर हमला नहीं करते, पर घायल हो, तो मार जरूर देते हैं।

अब मोहन सचमुच घबरा गया। वह इधर-उधर भागता 'कजरी-कजरी' चिल्ला रहा था। उसके साथ गायें भी रंभाकर मानो कजरी को ही पुकार रही थी। पूरा जंगल, घाटी कजरी के नाम से गूंज रही थी।

उधर सूरज ने तेजी से नीचे उतरना शुरु कर दिया। मोहन घुटनों के बल हताश बैठा था। कजरी के बिना घर कैसे जाए। तब तक एक दो चरवाहे भी आ गए।

"मोहन यहां देर तक रुकने से कोई फायदा नहीं। घर चलो।" एक साथी बोला।

"मैं अपनी कजरी को लिए बिना नहीं जाऊंगा।"

"अकेला यहां क्या करेगा भाई? अभी चल, गांव से कुछ लोगों को साथ लेकर आएंगे, उसे ढूंढ़ने।" दूसरे साथी ने समझाया।

अपने लेखक को जानिए

गिरिजा कुलश्रेष्ठ : व्याख्याता (हिन्दी), कविता, गीत, कहानियां, लघु-कथाएं, बाल-कहानियां, कविताएं, लघुनाटिकाएं विभिन्न समाचार पत्रों और पत्रिकाओं में नियमित प्रकाशन। छोटी-बड़ी दस पुस्तकें प्रकाशित। दो बाल कहानियां चिल्ड्रन बुक ट्रस्ट से पुरस्कृत

तब मोहन को भी ध्यान आया कि दूसरों की कई गायें भी साथ हैं, जो छोटे बछड़ों-बछियों की माएं हैं। घर पर बच्चे अपनी मां का इंतजार कर रहे होंगे। उनके लिए जाना ही होगा।

घर की ओर लौटते मोहन के पांव नहीं उठ रहे थे। उसकी आंखें लाल थीं। चेहरे पर घोर उदासी थी। अम्मा को क्या जबाब देगा? कजरी का सूना खूंटा कैसे देखेगा?

"आ गया बेटा! क्या बात है? मां ने मोहन को परेशान देख पूछा।

"अम्मा, कजरी खो गई। मैं उसे नहीं ढूंढ़ सका।" यह कहते-कहते मोहन रोआंसा हो गया।

अम्मा उससे कुछ पूछती और बताती, उससे पहले ही अंदर से रंभाने की आवाज आई।

यह आवाज सुनकर मोहन की आंखें चमकीं, "अम्मा यह कजरी है?"

अम्मा ने गदगद होकर हां में सिर हिलाया, पर मोहन मां को देखे बिना ही अंदर भागा और कजरी को सामने पाकर उसके गले से ऐसे जा लिपटा जैसे वर्षों बाद मिली हो। ✪

कहानी

होली का उपहार

होली का दिन था। गुंजन मैडम सुबह जल्दी उठकर रसोई में जाकर काम में जुट गईं। मोहल्ले के सभी लोग होली मिलने आएंगे और आज उनकी कक्षा के बच्चे भी उनसे होली मिलने आएंगे, दिनभर फुर्सत नहीं होगी। यही सोचते हुए उन्होंने दस बजे तक ढेर सारी गुझिया, गुलाब जामुन, गाजर का हलवा, मिठाइयां और पकौड़े बनाकर हॉटकेस में रख दिए और होली खेलने के लिए तैयार हो गईं।

एक के बाद एक लोग होली मिलने आने लगे और एक बजे तक का समय कब बीत गया, पता ही नहीं चला। मैडम स्नान और भोजन कर बैठी ही थीं कि बच्चों की टोली आ गई। रंग-बिरंगे कपड़े पहने बच्चे बहुत खुश थे। सब मैडम के लिए कुछ न कुछ लाए थे। गुलाबो ने गुलाब की पंखुडियां दीं। मैडम ने बच्चों को गुलाल का टीका लगाया और गुलाब की पंखुडियां सबके ऊपर उड़ेल दीं। सारे बच्चे खुशी से झूम उठे।

अब मिठाई खाने की बारी थी। बच्चे गोल घेरे में बैठ गए। मैडम ने सबको मिठाइयां दीं। सभी चाव से मिठाई खाने लगे। गुलाबो को गाजर का हलवा पसंद था। रजिया ने गुलाब जामुन और और सोनू ने पापड़ खाए। इधर बच्चे, मिठाइयां खाने में व्यस्त थे और उधर गुंजन मैडम बच्चों के लिए उपहार लेकर आ गईं। सभी बच्चों के लिए मैडम की तरफ से उपहार था। उपहार बांटते हुए मैडम की नजर राघव पर पड़ी। राघव ने बिल्कुल भी मिठाई नहीं खाई थी। मैडम ने कारण पूछा, तो राघव बोला,

चित्र : इंदिरा

"मैडम सोरेन।"

"हां! सोरेन तो आया ही नहीं, वह तो अपने चाक पर ही होगा।" संदीप बुदबुदाया।

मैडम बोलीं, "राघव आप मिठाई खाओ, सोरेन का उपहार और मिठाइयां, मैं उसके घर दे आऊंगी।"

"मैं भी आपके साथ चलूंगा।" राघव ने कहा।

गुलाबो और रजिया भी एक साथ बोल उठी, "हम भी चलेंगे, सोरेन भैया के घर।"

मैडम बोली, "आप लोग जल्दी मिठाइयां खत्म करो और हम सब चलेंगे सोरेन के घर।"

सोरेन राघव का दोस्त है। उसके पिताजी मिट्टी के बर्तन बनाते हैं और वह खाली समय में बर्तनों में रंग करके उन्हें सजाता है। सोरेन पढ़ाई में भी अव्वल है। जब सब बच्चे खेलते हैं, तो उसका समय चाक पर रखे बर्तनों में रंग भरने में बीतता है। उसके रंगे बर्तन बड़े ही सुंदर लगते हैं और उनका दाम भी बाजार में अधिक मिलता है। गुंजन मैडम हर त्योहार पर सोरेन के घर जाकर उपहार देती हैं।

आज भी सोरेन नाश्ता कर चाक पर चला गया। उसने ब्रश और रंगदानियां उठाईं और सुराही रंगने लगा। इस सुराही पर पिताजी ने सोरेन के कहने पर सुंदर डिजाइन उकेरा था। सोरेन बड़ी सावधानी से एक-एक खांचे को रंगने लगा। पूरी सुराही रंगने के बाद बहुत ही सुंदर लग रही थी।

अभी वह सुराही रंगकर बैठा ही था कि उसकी बहन पुटकी आकर बोली, "भैया खाना खा लो!"

सोरेन घर जाकर स्नान करने लगा। नहाने के बाद सबने गुलाल का टीका लगाया और भोजन करने लगे। मां ने आंवले की बर्फी और सिंघाड़े की कचरी बनाई थी। सोरेन को कचरी बहुत पसंद है। भोजन के बाद पुटकी झूला झूलने लगी। सोरेन ने आंगन साफ कर खाट पर नई चादर डाल दी। वह सोच रहा था, 'मैडम जरूर आएंगी।' तभी उसे कार का हार्न सुनाई दिया।

कार आंगन के पास आकर रुकी उसमें मैडम के साथ सारे बच्चे भी थे। राघव बहुत खुश था। सोरेन की मां ने आंगन में चटाई डाल दी और बच्चे चटाई पर बैठ गए। सबने एक-दूसरे को होली का टीका लगाया। सोरेन की मां ने बच्चों को कचरी और आंवले की बर्फी दी। बच्चे खाकर सोरेन के बाबू जी के पास चाक देखने चले गए।

मैडम ने कार से सुंदर दो बैग

निकाले और एक सोरेन को देते हुए बोलीं, "सोरेन, यह है आपका उपहार।" फिर पुटकी को खाट पर बैठाकर बोलीं, "यह रहा पुटकी का बैग और मिठाइयां। अब हमारी पुटकी भी स्कूल जाएगी। जाएगी न, पुटकी?"

पुटकी मुसकराकर चादर को कुरेदने लगी।

सोरेन ने मैडम को कचरी दी और उसकी मां आंवले की बर्फी लाई। मैडम बोलीं, बर्फी तो हम घर ले जाएंगे और हां! कचरी तो पुटकी के साथ ही खाएंगे।

मां ने बर्फी डिब्बे में रख दी और फिर सोरेन, पुटकी और मैडम चाक पर गए। बच्चे चाक पर बर्तन बनते देख आनंदित हो रहे थे। मैडम बोली, "अब हम चलेंगे।"

बाबू जी ने होली के उपहार में सब को एक-एक गुल्लक दिया। सुंदर रंगों से रंगे गुल्लक पाकर बच्चे फूले न समाए। बच्चे अपना-अपना गुल्लक लेकर कार की तरफ जाने लगे। तभी सोरेन ने आवाज दी, "मैडम जी!"

मैडम ने पीछे मुड़कर देखा, तो सोरेन हाथ में सुंदर सुराही लेकर खड़ा था। सुराही देखकर मैडम बोलीं, "अरे वाह! यह तो बहुत ही सुंदर बनी है, किसने रंगी?"

सोरेन बोला, "मैने रंगी है और आपके लिए है।"

मैडम ने सोरेन को गले लगा लिया और बोली, "यह होली तो हमेशा याद रहेगी।"

फिर सुराही हाथ में लेकर सबके साथ एक सेल्फी ली। बच्चे कार में बैठे और कार धीरे-धीरे आगे बढ़ने लगी। पुटकी और बच्चे एक-दूसरे को तब तक देखते रहे, जब तक कार ओझल न हो गई। ✪

अपने लेखक को जानिए

तारा दत्त जोशी : रा .इ .का हरिपुरा हरसान में शिक्षक। बाल विज्ञान कहानी, बाल विज्ञान कविता, व विज्ञान लेख। देवपुत्र, बालप्रहरी, प्रेरणा में बाल कहानी व कविताएं प्रकाशित। ज्ञान-विज्ञान बुलेटिन, जल चेतना, विज्ञान प्रगति, विज्ञान गरिमा सिंधु, पर्यावरण डाइजेस्ट, ड्रीम 2045 विज्ञान पत्रिकाओं में विज्ञान लेख विज्ञान कविताएं प्रकाशित ।

दिल्ली के अन्य संग्रहालयों से अलग और अनोखा है, आदिवासियों को समर्पित दिल्ली के झंडेवालान क्षेत्र स्थित आदिवासी संग्रहालय।

एक गैर सरकारी संस्थान द्वारा इस तरह का अनूठा संग्रहालय चलाना आसान काम नहीं है। सन् 1922 में जब गुजरात में भयंकर सूखा पड़ा, तो वहां काम करे रहे आदिवासी मजदूरों की दशा देख स्वयंसेवी ठक्कर बापा काफी दुखी हुए। उन्होंने अपनी सरकारी नौकरी छोड़ दी और भारतीय आदिम जाति सेवक संघ नाम से संस्था बनाई।

करीब दस वर्षों तक गहन शोध और आदिवासियों की वस्तुओं को संग्रह करने के बाद उन्होंने एक संग्रहालय खोलने का विचार किया। आखिर 1958 में दिल्ली के लिंक रोड पर इस संग्रहालय को स्थापित किया गया। तत्कालीन प्रधानमंत्री पं. जवाहरलाल नेहरू ने इसका उद्घाटन किया।

भारतीय आदिवासी संग्रहालय भारत के आदिवासियों के जीवन की एक झलक हमें दिखाती है। यहां विभिन्न प्रदेशों के आदिवासियों, जैसे भील, मुंडा, कोयांक, ओंग, भिस्मी तथा अन्य की आदमकद मूर्तियां प्रदर्शित हैं। साथ ही उनके जीवन की विभिन्न झांकियां भी देखने को मिलती हैं। विभिन्न जातियों के हस्तकला और कलात्मक सामान, जो विभिन्न क्षेत्रों के आदिवासियों ने बनाएं हैं, उन्हें भी यहां देखा जा सकता है।

आदिम जाति संग्रहालय ठक्कर बापा सदन नामक इमारत में है। संग्रहालय की इमारत के मुख्य द्वार पर काले पत्थर से बनी आदिवासियों की मूर्तियां आपका स्वागत करती हैं।

भवन के प्रथम मंजिल पर संग्रहालय है। यहीं पर इसे देखने के लिए टिकट मिलता है। आदिवासियों की मूर्तियां और उनके जीवन की झांकियां उन्हें देखने वालों के पास ले आती हैं। सामने लंबी गैलरी में बाईं तरफ आदिवासियों के प्रदर्शित कपड़े जहां अपनी कलात्मकता की छाप लोगों पर छोड़ती हैं, वहीं दाईं तरफ प्रदर्शित झांकियां उनके जीवन के विभिन्न कर्मों को दर्शाती हैं। लोग उनके जीवन को जीने लगते हैं।

करीब छह खंडों में विभाजित यह संग्रहालय आदिवासियों के रहन-सहन, अस्त्र-शस्त्र, रीति-रिवाज, वस्त्र, वाद्ययंत्र आदि पर संपूर्ण जानकारी यहां की सभी मूर्तियां उड़ीसा के मूर्तिकार फकीर चंद परीदा ने बनाई हैं। संग्रहालय में एक पुस्तकालय भी है। इसमें पांच हजार से ज्यादा आदिवासियों पर केंद्रित नई एवं दुर्लभ पुस्तकें शोध करने वालों के लिए उपलब्ध हैं।

अनिल जायसवाल

संग्रहालय का कलात्मक द्वार

कश्मीरी आदिवासी

आदिवासियों के हथियार

मध्य प्रदेश के आदिवासियों का मुखौटा

आदमकद मूर्ति

अरुणाचल प्रदेश के आदिवासियों का मुखौटा

आदिवासियों के वाद्ययंत्र

लुहार
आदिवासी

ओडिसा के
बोंडो आदिवासी

उड़ने वाला गुब्बारा

चित्र : सुशील दोषी

शहर में मेला लगा हुआ था। शिवम और प्रणिका ने अपने दादा-दादी को मेला दिखाने के लिए कहा। दादाजी ने अगले दिन शाम को मेला देखने चलने का वादा किया तो शिवम और प्रणिका खुश हो गए। फिर दोनों भाई-बहन घर में लुका-छिपी खेल खेलने लगे।

अगले दिन शाम के समय दादाजी-दादीजी, शिवम और प्रणिका को लेकर मेला देखने घर से निकल पड़े। थोड़ी देर बाद चारों वहां पहुंच गए।

मेले में अच्छी खासी भीड़ थी। सड़क के दोनों तरफ दुकानें लगी हुई थीं। बीच-बीच में बिजली के डोलर झूले, चकरियां आदि लगे हुए थे। गुब्बारे, पशु-पक्षियों के खिलौने, मुंह से बजने वाली मनोरंजक चीजें बच्चों को आकर्षित कर रही थीं।

"दादाजी, मैं यह लूंगी।" प्रणिका ने उड़ते हुए गुब्बारे की तरफ हाथ के इशारे से कहा।

"हां-हां, क्यों नहीं! अभी दिलाता हूं।" दादाजी ने प्यार से कहा।

दादाजी ने गुब्बारा खरीदकर प्रणिका को दिया। गुब्बारा पाकर वह बहुत खुश हुई।

"दादाजी-दादाजी! यह गुब्बारा हवा में क्यों उड़ रहा है? हम घर पर जो गुब्बारे फुलाते हैं, वे तो नहीं उड़ते हैं?"

"सही कह रही हो प्रणिका। इन उड़ने वाले गुब्बारों में हाइड्रोजन और हीलियम गैस होती है,जो काफी हलकी होती है।"

"और घर पर फुलाने वाले गुब्बारों में दादू?"

"घर पर फुलाने वाले गुब्बारे हम मुंह से फुलाते हैं। उसमें कार्बन डाइऑक्साइड आदि गैसें होती है, जो हाइड्रोजन और हीलियम से भारी होती है।" दादाजी ने

प्रणिका के सिर पर हाथ रखते हुए कहा।

"अच्छा। इसलिए मेरा गुब्बारा ऊपर उड़ रहा है।" प्रणिका ने खुश होकर कहा।

"हां प्रणिका, अगले साल हम विज्ञान की किताब में पढ़ेंगे।" शिवम ने समझाते हुए कहा।

"बेटी, शिवम सही कह रहा है।" दादीजी ने शिवम की तरफ देखते हुए कहा।

"हां दादीजी, लेकिन मुझे तो यह बात आज ही मालूम पड़ गई। कल स्कूल में मैं अपनी सहेलियों को बताऊंगी।" प्रणिका ने हंसते हुए कहा।

"तुम क्या लोगे शिवम?" दादीजी ने पूछा।

"मुझे कुछ नहीं लेना। बस आप तीनों के साथ उस बिजली वाले डोलर झूले में झूलना है।" शिवम ने नम्रता के साथ कहा।

"मुझे डर लगता है शिवम। तुम दोनों अपने दादाजी के साथ झूलो।" दादीजी ने मुंह फिराते हुए कहा।

"दादीजी, आपका बरसों का यह डर ही तो आज निकालना है। आओ दादीजी।" शिवम ने कहा।

"अरे भागवान, शिवम सही कह रहा है। आओ झूलते हैं। तुम्हें डर लगा, तो झूलेवाले से कहकर झूला रुकवा देंगे।"

दादीजी डरते हुए गई और हंसते हुए लौटीं।

चारों को मेले का मजा आ गया। खाने-पीने और घूमने-फिरने के बाद दादा-दादी अपने पोते-पोती के साथ घर लौट आए। ✪

अपने लेखक को जानिए

तरुण कुमार दाधीच : पिछले तीन दशक से साहित्य के क्षेत्र से जुड़ाव। बाल साहित्य पर सात एवं हिंदी साहित्य की विभिन्न विधाओं में भी अब तक सात पुस्तकें प्रकाशित राज्य सरकार द्वारा श्रेष्ठ शिक्षक के रूप में 2009 में सम्मानित

1. रिक्त स्थान भरो

निम्नलिखित होली से संबंधित प्रत्येक वाक्य में एक रिक्त स्थान है जिसमें भरने योग्य शब्द ह की बारहखड़ी से शुरू हो रहे हैं। वाक्यों को ध्यान से पढ़ें और उपयुक्त शब्द भरें।

1. लाला की दुकान पर लाल, गुलाबी,..........,पीली गुलाल बिक रही है।
2. चांदनी चौक के........... ने गुझिया, बर्फी व इमरती बनाकर सजाई।
3. चार घंटे तक रंग-गुलाल लगे रहने से चेहरे की.............बहुत खराब हो गई थी।
4. होली आने के कुछ दिन पहले से ही मन में मस्ती की........उठने लगती है।
5. जोकर की अजीब हरकतें देखकर सब ....कर हंसने लगे।
6. आज ब्रज की गली गली में होली का........... मचा हुआ था।
7. मंदिरों में फाग उत्सव का आनंद देखकर विदेशी पर्यटक......... रह जाते हैं।
8. सतीश ने बहुत......... की, फिर भी दोस्तों के हाथों रंगा ही गया।
9. प्रीति को उसकी सहेलियों ने पानी से भरे .... में डालकर मजा लिया।
10. ....को फागुन का रंगारंग त्योहार माना जाता है।
11. हर मोहल्ले में शोरगुल, गीत डांस और...........ही होली की पहचान है।

प्रकाश तातेड, उदयपुर

2. शब्द बनाओ

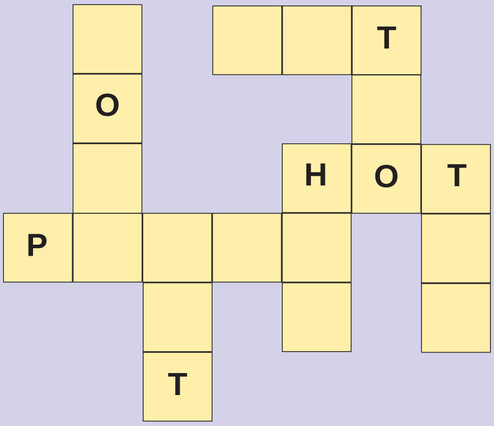

T O O P H

इन एल्फाबेट्स से शब्द बनाकर खानों में भरें।

3. होली का प्रसिद्ध गाना छिपा है, इन शब्दों में। जरा ढूंढो

जाते खिल रंगों जाते
दिल के रंग होली
में दिन हैं मिल हैं

4. हिसाब लगाओ

होली पर चिंकी अपनी मां के साथ बाजार में सब्जी और फल लेने गई। चिंकी की मां कुछ भी लेतीं और अगर उन्हें लगता कि उन्होंने ज्यादा ले लिया है, तो दुकानदार को चीज वापस भी कर देतीं, नहीं तो कम या ज्यादा करवा लेतीं। सबसे पहले उन्होंने 15 रुपए किलो के हिसाब से 4 किलो आलू लिए। आगे बढ़ने पर उन्होंने 25 रुपए किलो के हिसाब से 2 किलो प्याज लिए। फिर एक किलो बैगन लेने में 25 और 1 किलो भिंडी लेने में 50 रुपए लगाए।

अब उन्होंने 80 रुपए किलो भाव के सेब 160 रुपए के खरीदे। फिर उन्हें लगा कि आलू ज्यादा ले लिए हैं। उन्होंने जाकर दो किलो आलू वापस कर दिए और पैसे वापस ले लिए। आगे बढ़ने पर उन्हें याद आया कि चिंकी के पापा को पपीता बहुत पसंद हैं। उन्होंने तीन किलो वजन का पपीता खरीदा, जिसके लिए उन्हें 90 रुपए देने पड़े। चिंकी को मटर बहुत पसंद थे इसलिए उसके लिए 50 रुपए किलो वाले 500 ग्राम मटर लिए गए। चलते-चलते उन्होंने 500 ग्राम अमरूद 20 रुपए में लिए।

तभी उन्हें अनार वाला दिख गया, जो 130 रुपए किलो अनार बेच रहा था। चिंकी अनार के लिए जिद करने लगी, तो उसकी मम्मी ने पैसे गिने। उन्हें एक किलो के लिए पैसे कम पड़े, तो पैसे पूरे करने के लिए उन्होंने जाकर 80 रुपए के सेब वापस कर दिए और आकर एक किलो अनार ले लिया।

अब दोनों खुशी-खुशी घर लौटे।

अब बताओ

1. उन्होंने कितने रुपए सब्जी खरीदने में खर्च किए?
2. उन्होंने कितने किलो सब्जी खरीदी?
3. उन्होंने कितने किलो फल लिए?
4. उन्होंने कितने रुपए फल में खर्च किए?
5. उन्होंने कुल कितने रुपए खर्च किए?
6. फल और सब्जियों का कुल वजन भी बताओ।

अनिल

सही चित्र मिलाओ : खिलाड़ी को नीचे दी गई उनकी उपलब्धि से मिलाएं

नीचे की नंबरिंग गलत हैं। सही खिलाड़ी पहचानकर सही नंबर से मिलान करें

01.

02.

03.

04.

05.

06.

07.

08.

09.

10.

11.

12.

01. टेस्ट में सबसे ज्यादा विकेट लेने वाले लेग स्पिनर
02. टेस्ट में सबसे ज्यादा शतक
03. टेस्ट में सबसे ज्यादा विकेट
04. 20-20 इंटरनेशनल में सर्वाधिक शतक
05. टेस्ट में सबसे ज्यादा औसत वाले बल्लेबाज
06. टेस्ट मैचों में सबसे ज्यादा शिकार करने वाले विकेटकीपर
07. टेस्ट में सबसे पहले 500 विकेट लेने वाले गेंदबाज
08. टेस्ट में 5000 रन और 400 विकेट लेने वाले एकमात्र खिलाड़ी
09. 20-20 इंटरनेशनल में सबसे ज्यादा रन बनाने वाले खिलाड़ी
10. टेस्ट में फिल्डर के रूप में सबसे ज्यादा कैच लेने वाले
11. टेस्ट में सबसे ज्यादा विकेट लेने वाले तेज गेंदबाज
12. टेस्ट में सबसे पहले 10000 रन बनाने वाले बल्लेबाज

उत्तर

रिक्त स्थान भरो

1. हरी
2. हलवाई
3. हालत
4. हिलोरें
5. ही-ही
6. हुड़दंग
7. हैरान
8. होशियारी
9. हौज
10. होली,
11. हंगामा

2.

	P		P	O	T	
	O				O	
	O			H	O	T
P	H	O	T	O		O
		P		P		P
		T				

3. होली के दिन दिल खिल जाते हैं रंगों में रंग मिल जाते हैं

हिसाब लगाओ

सब्जी		फल	
2 किलो आलू	30		
2 किलो प्याज	50	1 किलो सेब	80
1 किलो बैंगन	25	3 किलो पपीता	90
1 किलो भिंडी	50	500 ग्राम अमरूद	20
500 ग्राम मटर	25	1 किलो अनार	130

1. 180 रुपए सब्जी में खर्च किए।
2. 6 किलो 500 ग्राम सब्जी खरीदी।
3. 5 किलो 500 ग्राम फल लिए।
4. 320 रुपए फल पर खर्च हुए।
5. उन्होंने 500 रुपए खर्च किए।
6. सब्जी और फलों का कुल वजन 12 किलो हुआ।

01. डॉन ब्रेडमैन : 05. औसत 99.94
02. कपिल देव : 08. 5248 रन, 434 विकेट
03. कोर्टनी वाल्श : 07. 519 विकेट
04. जेम्स एंडरसन : 11. 611 विकेट
05. गावसकर : 12. 4 मार्च 1987
06. मार्क बॉकस : 06. 532 कैच और स्टंपिंग
07. सचिन तेंदुलकर : 02. 49 शतक
08. मुथैय्या मुरलीधरन : 03. 800 विकेट
09. शेन वार्न : 01. 705 विकेट
10. राहुल द्रविड़ : 10. 210 कैच
11. रोहित शर्मा : 04. 4 शतक
12. विराट कोहली : 09. 2928 रन

भविष्य के सितारे

तुम बच्चों के लिए विशेष रूप से कुछ पेज हमने सुरक्षित किए हैं। तुम जिस रूप में चाहो, अपनी भावनाएं व्यक्त कर सकते हो। उन्हें संजोकर हम यहां देंगे।

आखिर तुम सब में से ही भविष्य के कलाकार, इस दुनिया के सामने आकर भारत का नाम रोशन करेंगे। कभी चित्रकार, तो कभी कहानीकार तो कभी कवि या विचारक बनकर। तो फटाफट रचनाएं भेजो

email : payasmagazine@gmail.com
whatsapp : 7982014609

बाल कोना में छपने वाले बच्चों में से तीन बच्चों को प्रथम (तीन सौ), द्वितीय (दो सौ) और तृतीय पुरस्कार (एक सौ रुपए) देने का निर्णय लिया है,दीप्ति मित्तल ने

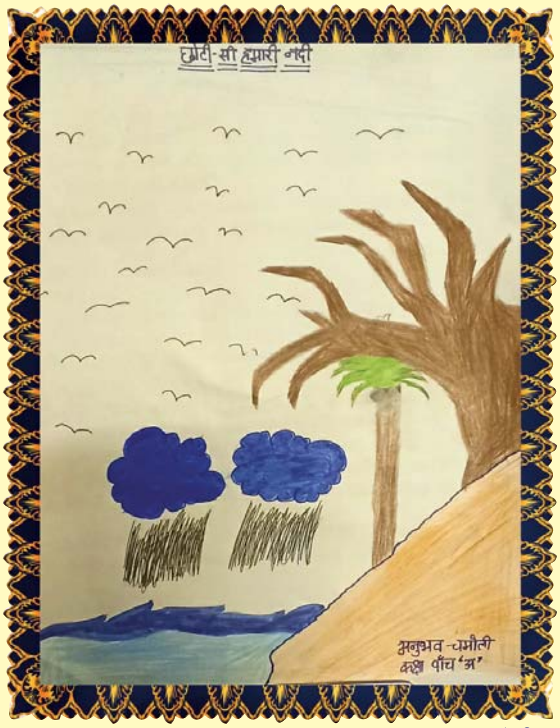

अनुभव चमोली

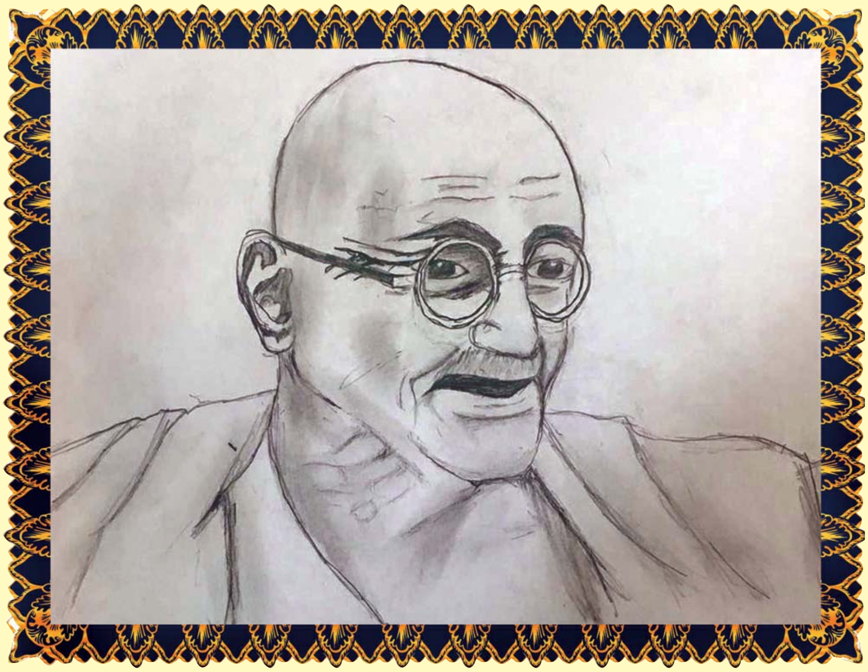

मयूर मिश्रा

आन्या

अनुभव चमोली,
उम्र : 10 वर्ष,
कक्षा : 5
केन्द्रीय विद्यालय, पौड़ी उत्तराखंड

नाम : मयूर मिश्रा
उम्र : 11 साल
कक्षा : 5, स्कूल : युवा भारती इंटरनेशनल स्कूल, सिंगापुर

नाम : आन्या
उम्र : 11 साल
कक्षा : 6
स्कूल : क्वींस वैली स्कूल, नई दिल्ली

शताक्षी

अर्पणा गर्ग

अतिक्ष जैन

नाम : शताक्षी
उम्र : 13 साल
कक्षा : 8, स्कूल : हनुमान प्रसाद पोलहको बालिका विद्यामंदिर, वृंदावन

नाम :–अपर्णा गर्ग
उम्र :– 15 वर्ष
कक्षा :– 11, स्कूल : एल बी एस सीनियर से. स्कूल, कोटा

नाम अतिक्ष जैन
कक्षा – 4
उम्र : 9,
स्कूल : भारतीय विद्या भवन (विद्याश्रम), जयपुर

सात्विक यादव

तानिया कौशिक

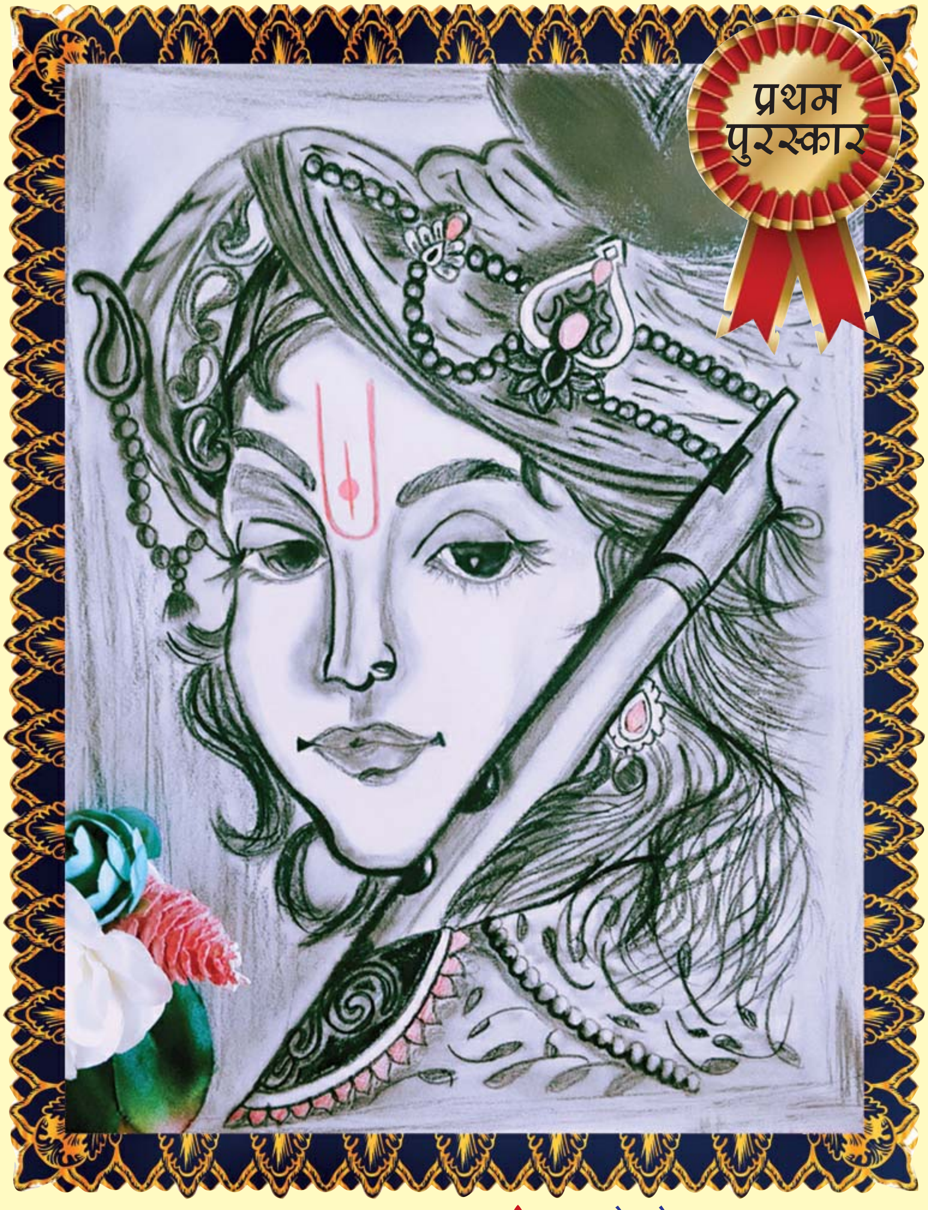

स्नेहा चोखडा

सात्विक यादव
उम्र
कक्षा यू के जी
स्कूल एच पी चिल्ड्रेन एकैडमी, गोरखपुर

तानिया कौशिक
उम्र : 9 वर्ष
कक्षा 4
स्कूल सेंट्रल स्कूल बीकानेर

नाम : स्नेहा चोखडा
उम्र : 14 साल
कक्षा : 9, स्कूल : पोद्दार इंटरनेशनल, थाने, महाराष्ट्र

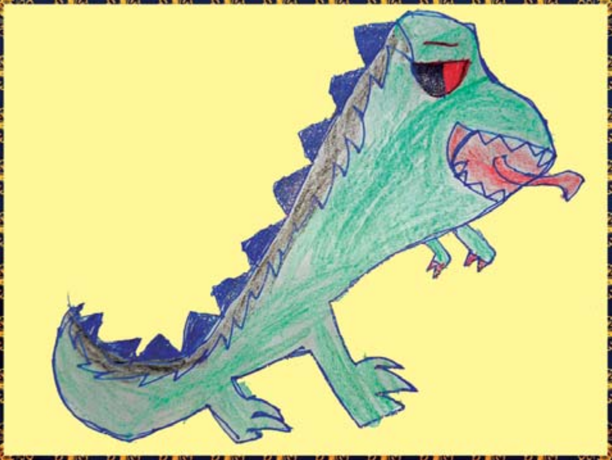

अफ्फान

श्रृतुजा यादव

आंचल

अफ्फान अहमद
कक्षा : के जी
स्कूल : सनराइज पब्लिक स्कूल, नई दिल्ली

श्रीतुजा : यादव
उम्र : 5
कक्षा : यू के जी
स्कूल : एच पी चिल्ड्रेन एकैडमी, गोरखपुर

नाम : आंचल
उम्र : 12 साल
कक्षा : 7,
स्कूल : अलमाईटी पब्लिक स्कूल, हमीरपुर (हि.प्र.)

द्वितीय पुरस्कार

वक्त की आवाज

मैंने कहीं सुना था,
कि वक्त किसी के लिए रुकता नहीं,
और किसी के आगे झुकता नहीं।
दूसरों को रुलाकर खुशी पाता है,
न जाने इतनी क्रूरता वो कहां से लाता है ?

उस दिन वक्त मेरे पास आया,
कहा, इतना भी मैं बुरा नहीं, जितना तुमने बतलाया।
मैं तो कर्मवान का मित्र हूं,
नेक भी हूं, क्रूर भी हूं।

मैं वो हूं, जो तुम सभी के लिए कभी नहीं लेता अवकाश,
फिर भी क्यों हो सभी मुझसे निराश।
अहंकारियों का अहंकार मैंने भू पर गिरता देखा है,
कर्मवान को आकाश छूते देखा है।

मैं तब भी नहीं थी मानी ,
क्योंकि उसकी अहमियत मैंने नहीं थी जानी।
मैंने कहा, तेरी जरुरत नहीं है हमें,
जा, तू चला जा, कोई आपत्ति नहीं है हमें।

उसने कहा, तुम्हारी बात मानकर चला जाऊंगा,
अगर याद आए तो बुलाना, मैं झट से आ जाऊंगा।
वक्त अब चला था गया,
पर मुझे कुछ भी न लगा नया।

पर कुछ समय बाद मानो प्रलय आ गया।
दिन से रात न हुआ, अंधकार छा गया।
विनाशकारी घटनाएं और भी बड़ी आयीं ,
अब मुझे अपनी गलती समझ आयी।

मैंने उससे माफी मांगी और उसे वापस बुलाया,
और उसके महत्त्व का गुणगान गया।
वक्त की नजाकत को समझना ही जीवन की कुंजी है,
क्योंकि इसके बिना व्यर्थ हमारी पूंजी है।

नाम : रसलीन कौर
उम्र : 13 साल
कक्षा : 8
स्कूल : मीरामाडल स्कूल, दिल्ली

2nd

पिछले कई महीनों से मुझे स्कूल की बिल्कुल याद नहीं आई, क्योंकि...

मैं अपनी वार्षिक परीक्षा के बाद अपनी दादी के पास आ गई थी। यहां पर दीदी, भैया, चाचा, चाचीजी के साथ रहती हूं। यहां आने के बाद हमारे देश में कोरोना के कारण स्कूल बंद हो गया।

हमारी आनलाइन पढ़ाई शुरू हो गई और होमवर्क और परीक्षा भी आनलाइन ही हुई। आनलाइन पढ़ाई से हम घर में ज्यादा समय रह पाते हैं। जिसके कारण मैं घर में रोज व्यायाम कर पाती हूं। पढ़ाई के अलावा मैं दादी के साथ पौधे लगाना सीखी। मैंने प्याज, लहसुन, चना, लौकी और आम के पेड़ लगाए। मैं कबूतर को खाना भी देती हूं। उनके बच्चे बहुत प्यारे हैं और अब वे मेरे दोस्त बन गए हैं। घर से हम बाहर नहीं निकलते, इसलिए घर में दीदी भैया, सभी के साथ मैं लूडो खेलती हूं। पापा और चाचा जी ने मुझे गणित और विज्ञान की खेल खेल में बहुत सारी जानकारी दी है। दिन भर व्यस्त रहने के कारण मुझे स्कूल की बिल्कुल याद नहीं आती।

कोरोना के कारण हमें बहुत साफ सफाई रखनी पड़ती है। मैं मम्मी का सफाई में हाथ भी बंटाती हूं। रात को दादीजी रोज नई-नई कहानियां सुनाती हैं। सबके साथ घर में रहने में बहुत मजा आ रहा है। पहले कभी हम ऐसे इतने दिन साथ नहीं रहे और न ही इतनी सुंदर कहानियां सुनने का मौका मिलता था।

कोरोना की छुट्टी में बहुत आनंद आ रहा है और बहुत कुछ सीखने को मिल रहा है।

आन्या
स्कूल : क्वींस वैली स्कूल, नई दिल्ली

रंग-बिरंगा छाता

रंग-बिरंगा मेरा छाता
बारिश होती छत बन जाता,
गीला होकर भी वह मुझको
जगह जगह की सैर कराता।

टप-टप टप-टप पानी गिरता
सिर ऊपर वो हिलता-डुलता,
तेज हवाओं के झोंको संग
उड़ जाने को मचलता रहता।

आठ तीलियां और एक डंडा
ऊपर नुकीली चोंच है रखता,
बंद जब होता है तब देखो तो
कितना आज्ञाकारी है बनता।

कहीं पर भी लटक जाता है
चूं-चपड़ बिल्कुल ना करता
बूढ़े लोगों की तो न पूछो
चलने-फिरने की लाठी बनता।

दिया शर्मा

विश्वास

तृतीय पुरस्कार

तिनका-तिनका चोंच में लिए
चिड़िया भटके नीड़ के लिए,
एक डाल से दूरी डाल
तिनका देती हवा उछाल,
चिड़िया के मन में विश्वास
पूरी होगी मेरी आस।

एक नीड़ होगा अपना
पूरा होगा मेरा सपना,
उसकी मेहनत ने तोड़े
क्रूर इरादे तेज पवन के,
आखिर उसने बना लिया
प्यारा सा घर बड़ी जतन से।

इसी तरह तुम भी बच्चों
संकट से हिम्मत ना हारो,
लगन लगाकर काम करो
मन में एक विश्वास भरो।
चूम ही लेगी कदम सफलता
पास न भटकेगी असफलता।

मानसी कदम

मानसी कदम,
उम्र : 12 वर्ष,
कक्षा : सात,
केंद्रीय स्कूल, गोल मार्केट, नई दिल्ली

होली

बच्चों की यह होली आई
देखो-देखो होली आई।

रंग भरी पिचकारी मारो
खूब उड़ाओ गुलाल,
एक दूजे को रंग दो जल्दी
बच्चों करो धमाल।

घर-घर में हैं पुए पक रहे
और सजे पकवान,
देखो कुछ ना बचने पाए
खाओ सब सामान।

दौड़ो कूदो नाचो-गाओ
एक दूजे को गले लगाओ,
खूब मनाई होली तुमने
शाम हो गई घर को जाओ।

यातुशी इंदुरत्न

मेरे कैमरे से...

नाम : यातुशी इंदुरत्न
उम्र : 13 साल
कक्षा : 9,
स्कूल : न्यू एरा हाई स्कूल, ज्ञानचक, पटना

नाम : अनन्या विकास
उम्र : 13 साल
कक्षा : 9, स्कूल : आदित्य बिड़ला पब्लिक स्कूल, रेनुसागर, उ.प्र.

अनन्या विकास

राइजिंग स्टार

एंजेल गांधी

सुरों के सहारे भविष्य से लय-ताल मिलाने की कोशिश

कहते हैं, मन में लगन हो, तो आशाओं को पंख लगते देर नहीं लगती। साधनों का अभाव भी किसी प्रतिभा को ज्यादा दिन तक नहीं रोक सकता। सुरीली आवाज की राजकुमारी नन्ही एंजेल की आशाओं की उड़ान कुछ कुछ ऐसी ही है।

रायबरेली (उत्तर प्रदेश) के छोटे से कस्बे ऊंचाहार में 2008 में जन्मी एंजेल को मीठे सुर प्रकृति से ही उपहार में मिले। पांच-छह वर्ष की होने तक वह बिना किसी औपचारिक प्रशिक्षण के ही टीवी और मोबाइल पर सुने गीतों को स्कूल और स्थानीय मंचों पर हू बहू गाने और थिरकने लगी थी।

मात्र 11 वर्ष की आयु में एंजेल ने एक्सिस एफएम आयडल सिंगिंग कंपीटीशन 2018 जैसी राष्ट्रीय प्रतियोगिता में नार्थ जोन से सेमीफाइनल तक जगह बनाई। दिल्ली में हुई इस प्रतियोगिता में अनुभवी गायकों के बीच एक बड़े मंच पर गाने का उसका पहला अनुभव था। फिर भी उसने बेहतरीन परफार्मेंस देकर खूब वाहवाही और तालियां बटोरीं। प्रतियोगिता के जज अनीस मैथ्यू तो उससे इतने प्रभावित हुए कि उन्होने एंजेल के साथ मंच पर विशेष रूप से एक युगल गीत गाकर उसका उत्साह बढ़ाया।

एंजेल इस प्रतियोगिता के फाइनल तक तो नहीं जा सकी, लेकिन भविष्य की संभावनाओं के द्वार उसके लिए खुलने लगे।

कुछ ही महीने बाद भारत सरकार संस्कृति मंत्रालय के सहयोग से आयोजित संगीत संध्या, आजादी के तराने (एक शाम अटल बिहारी बाजपेयी के नाम) आयोजन में 'नन्हा मुन्ना राही हूं, देश का सिपाही हूं' नामक गीत पर जबर्दस्त प्रस्तुति देते हुए बाल कला रत्न सम्मान और पुरस्कार हासिल कर दिखाया

कोविड19 के लॉकडाउन के दौरान अवसर का लाभ उठाते हुए एंजेल ने ऑन लाइन रहकर पूरा समय संगीत की बारीकियां सीखने में बिताया और अब वह प्रयाग संगीत

समिति की गायन छात्रा के रूप में औपचारिक प्रशिक्षण ले रही है।

इस बीच एक बार मुम्बई की एक फिल्म निर्माण संस्था के लिए बॉलीवुड कलाकार सत्यकाम आनंद लाइव चैट सीरियल 'मेरे सैनिक मेरे भाई' कार्यक्रम अतिथि के रूप में एंजेल के पिता अरविंद कुमार साहू (जो कि प्रसिद्ध बाल साहित्यकार हैं) का साक्षात्कार कर रहे थे। संयोग से उसमें एंजेल को गाने का अवसर मिला, तो नन्ही एंजेल की सादगी भरी मधुर और सुरीली आवाज से सत्यकाम आनन्द जी इतने प्रभावित हुए कि उन्होंने तत्काल अपनी किसी आगामी निर्माणाधीन फिल्म के लिए उसे एक गीत गाने के लिए आमंत्रित कर दिया। इस फिल्म की शूटिंग शीघ्र ही शुरू होने वाली है

एंजेल स्थानीय डीएवी पब्लिक स्कूल में सातवीं कक्षा की छात्रा है। पढ़ाई में व्यस्तता के बावजूद संगीत में रुचि के चलते वह समय निकालकर नियमित संगीत साधना अवश्य करती है।

खबरें इंटरनेट से...

अहमदाबाद में दुनिया के सबसे बड़े क्रिकेट स्टेडियम की क्या हैं विशेषताएं?

अहमदाबाद (गुजरात) का मोटेरा स्टेडियम दुनिया का सबसे बड़ा क्रिकेट स्टेडियम है जिसमें 1.10 लाख लोग बैठकर मैच देख सकते हैं। 63 एकड़ में बने इस स्टेडियम में ऐडवांस ड्रेनेज की सुविधा है जिससे बारिश के 30 मिनट में आउटफील्ड सूख सकता है। स्टेडियम में 76 कॉर्पोरेट बॉक्स व 4 ड्रेसिंग रूम हैं और एक इनडोर क्रिकेट अकैडमी भी है।

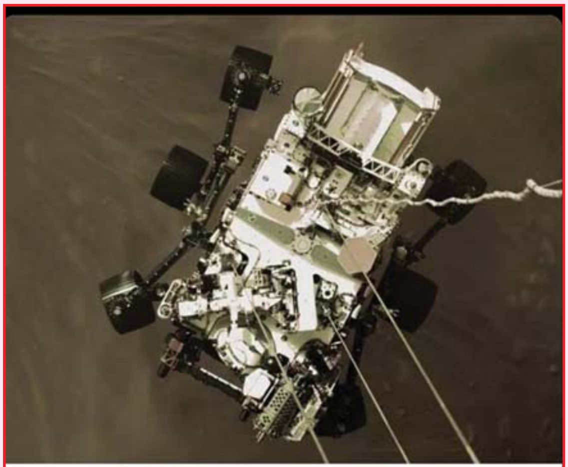

मंगल ग्रह की सतह पर रिकॉर्ड हुआ पहला ऑडियो नासा ने जारी किया

अमेरिकी स्पेस एजेंसी नासा ने पर्सीवियरेंस रोवर द्वारा मंगल ग्रह की सतह पर रिकॉर्ड किया गया पहला ऑडियो सोमवार को जारी किया। इसमें हवाओं की आवाज़ रिकॉर्ड हुई है और रोवर की यांत्रिक ध्वनि सुनी जा सकती है। बतौर नासा, रोवर के लैंड होने से पहले माइक्रोफोन काम नहीं कर रहे थे लेकिन लैंडिंग के बाद ऑडियो बन गया।

चमोली में बनी झील का मुंह विशेषज्ञों की टीम ने 15 फीट चौड़ा किया

उत्तराखंड एसडीआरएफ के कमांडेंट नवनीत भुल्लर ने कहा है कि 30-सदस्यों वाली विशेषज्ञ टीम ने चमोली में बाढ़ के बाद बनी झील से पानी के निकास के लिए उसका मुंह 15-फीट चौड़ा कर दिया है। उन्होंने हिन्दुस्तान टाइम्स से कहा, "इससे झील फटने या चमोली जैसी त्रासदी रुक गई है...मुंह और चौड़ा करने के लिए...टीम वहां डेरा डाले हुए है।"

ऑस्ट्रेलिया में मिली कंगारू की 17300 साल पहले की देश की सबसे पुरानी ज्ञात रॉक आर्ट पेंटिंग

ऑस्ट्रेलियाई वैज्ञानिकों ने एक कंगारू की 17,300 साल पहले की देश की सबसे पुरानी ज्ञात रॉक आर्ट पेंटिंग की खोज की है। 2 मीटर लंबी पेंटिंग को एक रॉक शेल्टर की छत पर लाल गेरू से चित्रित किया गया है। यह पश्चिमी ऑस्ट्रेलिया के किंबरले क्षेत्र में पाई गई जो अपने आदिवासी शैली के चित्रों के लिए जाना जाता है।

आभार : inshorts

चंद्रयान-3 के 2022 में लॉन्च होने की संभावना है: इसरो प्रमुख के. सिवन

इसरो प्रमुख के. सिवन के मुताबिक, चंद्रयान-3 मिशन 2022 में लॉन्च होने की संभावना है। उन्होंने कहा, "हम इस पर काम कर रहे हैं...इसकी बनावट चंद्रयान-2 की तरह है...लेकिन इसमें ऑर्बिटर नहीं होगा...चंद्रयान-2 के दौरान लॉन्च किए गए ऑर्बिटर का ही इस्तेमाल किया जाएगा।" इसरो की दिसंबर में गगनयान प्रोजेक्ट के तहत पहला मानवरहित मिशन लॉन्च करने की योजना है।

एक पांव के बिना जन्मे कोआला को डेंटिस्ट ने ऑस्ट्रेलिया में लगाया कृत्रिम पैर

ऑस्ट्रेलिया में एक पांव के बिना जन्मे ट्रायम्फ नामक कोआला को एक डेंटिस्ट ने कृत्रिम पांव लगाया जिसके बाद वह पेड़ों पर चढ़ने और भागने में समर्थ है। वीडियोज़ में कोआला डेंटिस्ट जॉन डोलमैन द्वारा तैयार किया गया गुलाबी कृत्रिम पैर लगाए दिख रहा है। एक अमेरिकी कंपनी ने उसके लिए पैर बनाने की कोशिश की थी लेकिन असफल रही।

139 साल पुराने मकान को ₹2.9 करोड़ में सैन फ्रांसिस्को में 6 ब्लॉक दूर किया गया शिफ्ट

सैन फ्रांसिस्को में 807 फ्रैंकलिन स्ट्रीट पर 139 साल से मौजूद 2 मंज़िले विक्टोरियन हाउस को रविवार को विशाल डॉलीज़ पर रखकर 6 ब्लॉक दूर शिफ्ट किया गया। बतौर रिपोर्ट्स, 6 बेडरूम वाले इस मकान के मालिक व पेशे से ब्रोकर टिम ब्राउन इसे शिफ्ट करने की फीस और मूविंग कॉस्ट के तौर पर $4,00,000 (₹2.9 करोड़) का भुगतान करेंगे।

यूके की 21-वर्षीय महिला ने सबसे कम उम्र में सोलो रोइंग कर पार किया अटलांटिक महासागर

नॉर्थ यॉर्कशायर (ब्रिटेन) की एक 21-वर्षीय स्विमिंग टीचर सोलो रोइंग कर अटलांटिक महासागर पार करने वाली सबसे कम उम्र की महिला बन गई हैं। पार्ट टाइम टीचर और बारटेंडर जैस्मिन हैरिसन ने दिसंबर में कैनरी द्वीप से यात्रा शुरू की थी। 70 दिन, 3 घंटे और 48 मिनट में 3,000 मील कवर करने के बाद वह कैरेबियाई द्वीप ऐंटीगा पहुंचीं।

पुस्तक परिचय

पुस्तक : कोरोना वॉरियस
लेखक : इंजी. ललित शौर्य
प्रकाशक : अविचल प्रकाशन, ऊंचापुल, हल्द्वानी, उत्तराखंड
मूल्य : 160 रुपए

कोरोना काल का अहम दस्तावेज है 'कोरोना वॉरियर्स'

कोरोना वॉरियर्स ऐसा कहानी संग्रह है, जिसमें कोरोना काल के सभी उतार-चढ़ावों प्रस्तुत किया गया है। हर कहानी में कोरोना काल के सभी पहलुओं का उल्लेख है।

पहली कहानी वायरस के बारे में जानकारी देती है कि किस तरह से वायरस हमारे शरीर में आकर एक्टिव हो जाते हैं और लोगों को बीमार करते हैं। दूसरी कहानी हाथ धोने की आदत के बारे में बताती है, अक्सर बच्चे जल्दीबाजी में खाने बैठ जाते हैं और कहते हैं हाथ तो साफ ही हैं। 'पिंजरे में इंसान' कहानी के माध्यम से लेखक ने आदमी की व्यथा के बारे में तो बताया है साथ ही कुछ समय तक इंसानों के घरों में रहने से प्रकृति में पर्यावरण कितना स्वच्छ हुआ है।

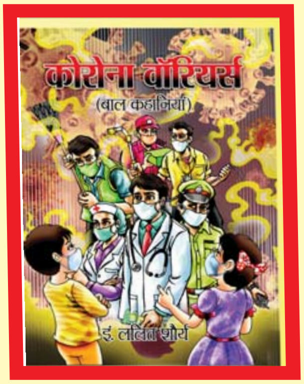

अगली कहानी 'कोरोना वॉरियर्स' में डॉक्टर, पुलिस, सेना, दुकानदार आदि ऐसे लोग हैं, जो खुद को बीमारी से बचाते हुए लोगों की सेवा करने को तत्पर है जिस कारण उनकी तुलना योद्धाओं से की है।

कोरोना काल में जब कुछ अंधविश्वास की बातें हुईं, ऐसे समय में अफवाह न फैलाते हुए डॉक्टर द्वारा दी गयी गाइडलाइन का पालन करने की बात कही गई है।

ये कहानियां कोरोना वायरस सक्रिय होते समय की हैं। यह कहानी संग्रह इस पूरे साल भर का दस्तावेज साबित होगा। भावी पीढ़ी भी इस पुस्तक से यह जान पाएगी कि इस संक्रामक बीमारी के दौरान हालात कैसे रहे होंगे। आकर्षक व कहानी से संबंधित चित्रों से सजी यह पुस्तक बच्चों के साथ साथ पूरे समाज के लिए समान रूप से उपयोगी है। नन्हे बच्चे जिन्होंने अब तक पढ़ना नहीं सीखा, वो भी चित्रों पर बातें कर सकेंगे।

भविष्य में जब कभी पुस्तक के पन्ने पलटाये जाएंगे तो कोरोना से जूझते इस काल की तस्वीरें उभर आएंगी।

समीक्षक : जयमाला देवलाल

पुस्तक : उड़ती चारपाई
लेखक : आंजेलो फानेल्ली
इतालवी से अनुवाद : मेघना पालीशकर
प्रकाशक : एकलव्य, भोपाल
फोनः+91 7552977770-71-72-73

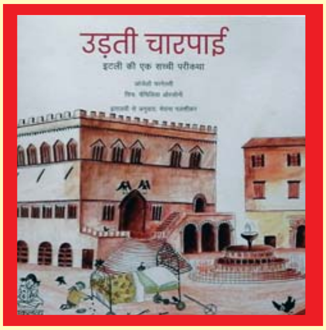

किताब का शीर्षक सहसा ही पाठक का ध्यान आकर्षित करता है। साथ ही मन एक संदेह से भर जाता है कि क्या परीकथाएं भी सच्ची हुआ करती हैं?

वैसे हम सभी को परियों की दुनिया अच्छी लगती हैं। विशेषकर तब जब हम बुरे दौर से गुजर रहे होते हैं और खुद को कठिन समय में फंसा हुआ महसूस करते हैं। ऐसे समय में कल्पनाएं अहम भूमिका निभाती है।

उड़ती चारपाई अंधेरों के बीच ऐसी ही सकारात्मकता और रोशनी के तलाश की कहानी है। वित्तोरियो इस कहानी का मुख्य पात्र है जो कि इटली के गांव में रहता है। 'पागल' उसे गांव के लोग कहते थे। उसकी अजीबोगरीब बातें और आविष्कारों की वजह से। वह खुद को वैज्ञानिक भी नहीं मानता था। यह सच था कि वह अभावों में रह रहा था। लेकिन उसका घर विचित्र, रहस्यमयी और थोड़ी सी डरावनी चीजों से भरा था।

जीवन में ऐसे कई समय आते हैं जब कोई अपने आप को नितांत अकेला, लाचार और बोरियत से घिरा पाता है। वित्तोरियो की ऐसे ही कठिन समय से निकलने के तरीकों को इस किताब में कहानी के माध्यम से बताया गया। अपनी लंबी बीमारी के दिनों में वह सोचता रहा कि बीमारी से कैसे राहत मिल सकती है। तभी उसे उड़ती चारपाई का ख्याल आता है और वह उसे साकार भी करता है। इस कहानी के अंत में यह महसूस होता है कि वित्तोरियो का जीवन और उसकी यह घटना कालातीत है।

किताब के अंत में लेखक आंजेलो फानेल्ली ने लिखा है कि वित्तोरियो की चारपाई उनकी संस्था 'लिबेरो पेन्सातोरे' में रखी है। यहां तक आते-आते पाठक 'सच्ची परिकथा' के मर्म को समझ जाता है।

पेंसिल कलर से बने रंगीन इलस्ट्रेशन इस कहानी को सजीव बनाते हैं। अनुवाद भी सरस हैं।

समीक्षक : नवनीत नीरव

हंसना जरूरी है

प्रवीन एक काला और एक सफेद जूता पहनकर स्कूल चला गया।

टीचर, "यह क्या! तुम एक काला और एक सफेद जूता पहनकर आ गए। घर जाओ और जूता बदलकर आओ।"

प्रवीन, "सर, कोई फायदा नहीं होगा, घर में भी एक काला और एक सफेद जूता ही रखा है।"

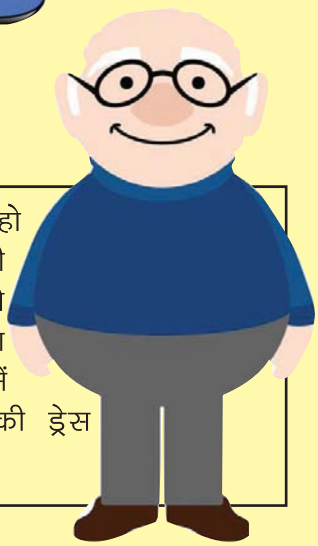

ब्रैंडिड कपड़ों की ही बातें हो रही थीं, तभी ताऊजी बोले, "आजकल तो वे लोग भी ब्रैंड की बात करते हैं, जो बचपन में बरात में भी स्कूल की ड्रेस पहनकर जाते थे।"

यासमीन, "जाकिर, अरे, इतना हांफ क्यों रहे हो?"

जाकिर, "क्या बताऊं, जब से कुत्तों को पता लगा है कि 21 के बजाय अब एक ही इंजेक्शन लगाना पड़ता है, तो तब से काटने के बजाय बहुत दौड़ाने लग गए हैं।"

ज्योतिष, "बच्चा, तुम बहुत पढ़ोगे।"

विवेक, "जी, पढ़ तो मैं पांच साल से रहा हूं। आप तो बस यह बता दें कि पास कब होऊंगा।"

टीचर, "माइक्रोसॉफ्ट प्रोडक्ट्स के नाम बताओ?"

जतिन, "एमएस एक्सेल।"

राहुल, "एमएस वर्ड।"

मिनी, "एमएस पावर पॉइंट।"

साहिल काफी देर तक सोचता रहा। फिर अचानक बोला, "एमएस धोनी!"

एक बार जसवीर को सैनिकों ने पकड़ लिया और उसे बादशाह के पास ले गए।

बादशाह ने कहा, "इसे बंदी बना दिया जाए।"

जसवीर, "नहीं जहांपनाह, मुझ पर रहम करें, मुझे बंदा ही रहने दें, बंदी न बनाएं।"

टेस्ट क्रिकेट

किस चीज की शुरुआत कब और कैसे हुई, इस पर हमेशा मतभेद रहता है। कहने वाले कहते हैं कि गडरियों ने इस खेल की शुरुआत की थी। जानवरों को चरने के लिए छोड़ने के बाद गडरिए बालक एक खेल खेलने लगते थे। एक लड़का कंकड़ फेंकता था, तो दूसरा उसे पेड़ की टहनी या डंडे से मारता था। यह खेल पेड़ के पास खड़े होकर खेला जाता था। यदि कंकड़ खिलाड़ी को छकाता हुआ पेड़ से जा टकराता था, तो दूसरे को बारी मिल जाती थी।

सन 1300 में इंग्लैंड के 15 वर्षीय राजकुमार एडवर्ड द्वारा क्रेग नामक खेल खेलने का वर्णन आता है परंतु यह क्रेग आज की क्रिकेट ही है, यह कहना मुश्किल है।

सन 1598 में एक एक स्कूल की जमीन पर कब्जा के लिए चले मुकदमे में एक व्यक्ति ने दावा किया कि यह जमीन उसकी है। वह करीब पचास वर्ष पहले इस जमीन पर क्रेकेट खेला करता था।

1611 में तब दो व्यक्तियों पर मुकदमा चलाया गया था। उनका कुसूर था कि वे चर्च जाने की जगह क्रिकेट खेलने चले गए थे।

23 सितंबर 1771 को रिएगेट और हैमब्लेडन क्लब के बीच मैच हो रहा था। एक खिलाड़ी जब बल्लेबाजी करने उतरा, तो उसके बल्ले की चौड़ाई विकेट के बराबर थी। इससे परेशान होकर पहली बार सोचा कि क्रिकेट को ठीक से खेलने के लिए कुछ नियम जरूरी हैं। इस तरह 1774 में पहली बार नियम बने पर इन्हें छापा गया सन 1775 में।

सन 1788 में इंग्लैंड के मैरीलीबोन क्रिकेट क्लब (एम.सी.सी) ने पहली बार क्रिकेट के नियमों को बारीकी से जांचकर छपवाया। इसे नाम दिया गया लॉ आफ क्रिकेट यानी क्रिकेट के नियम। इसमें पहली बार क्रिकेट के सारे नियम एक जगह और एक साथ प्रकाशित किए गए थे।

आरंभ में प्रति ओवर चार गेंदें फेंकी जाती थी। सन 1889 में यह बढ़कर पांच हो गई। सन 1900 में पहली बार छह गेंदों का ओवर शुरू हुआ जो आज भी जारी है। पर सन 1922 में आस्ट्रेलिया ने अपने यहां आठ बालों का एक ओवर प्रयोग किया। 1924 में न्यूजीलैंड तथा 1947 में दक्षिण अफ्रीका ने भी आठ वालों का ओवर अपना लिया। पर आखिर 1979 में यह सुनिश्चित कर दिया गया कि किसी भी देश में छह से ज्यादा गेंदों का ओवर नहीं होगा।

पहली बार 1844 में अमेरिका और कनाडा के बीच न्यू जर्सी में अंतर्राष्ट्रीय क्रिकेट मैच खेला गया। इसके बाद एम.सी.सी. ने सोचा कि इंग्लैंड और उसके उपनिवेशों के बीच अच्छे संबंध बनाने में क्रिकेट का उपयोग किया जाना चाहिए।

1877 में जेम्स लिलि ह्वाइट पानी जहाज से इंग्लैंड की क्रिकेट टीम लेकर आस्ट्रेलिया गए। 5 मार्च 1877 को दो देशों के बीच पहली बार औपचारिक रूप से टेस्ट मैच मेलबोर्न में खेला गया। इस खेल के माहिर थे इंग्लैंड के खिलाड़ी। पर मालिकों और गुलामों के बीच हुए इस मैच को गुलाम देश आस्ट्रेलिया ने 45 रनों से जीता। संयोग की बात यह है कि सौ साल बाद आस्ट्रेलिया में इस मैच की याद में शताब्दी टेस्ट मैच खेला गया। उसे भी आस्ट्रेलिया ने 45 रन से जीता था।

धन्यवाद ज्ञापन

आप सबके सहयोग से जनवरी 2021 से बच्चों के लिए एक ऑनलाइन निशुल्क बाल पत्रिका निकालने की जो योजना थी, वह मूर्त रूप लेने में सफल रही। एक अकेला चना भाड़ नहीं फोड़ सकता, पर सबके सहयोग से अपनी बात लोगों तक मजबूती से जरूर रख सकता है। अब पायस का तीसरा अंक आप सबके सामने है।

इस राह पर आप सबके भरोसा चला। सब साथियों का सहयोग मिला। चाहे वरिष्ठ हों अथवा युवा साथी, सभी ने यथासंभव सहयोग दिया। जिन साहित्यकार साथियों से रचना मांगी, उन्होंने सहर्ष अपनी रचना के साथ शुभकामनाएं भी दीं। कुछ साथियों ने निशुल्क रचना देकर हिम्मत बंधाई, तो कुछ चित्रकार साथियों ने नाम मात्र का शुल्क लेकर कहानियों के लिए सुंदर चित्र बनाए। बहुत से साथियों ने पत्रिका को आर्थिक मदद दी, जिससे पत्रिका के लिए आवश्यक खर्चों को पूरा किया गया।

यहां उन साथियों को नमन, जिन्होंने पत्रिका के लिए आर्थिक मदद की।

1. फकीरचंद्र शुक्ला
2. मोनिका अग्रवाल
3. दीप्ति मित्तल
4. अरविंद कुमार साहू
5. भास्कर लोचन
6. रेनू मंडल

एक अपील

यह पत्रिका आप तक निशुल्क पहुंच रही है। अगर आप को लगे कि पत्रिका तैयार करने में मेहनत की गई है, तो पढ़ने के बाद 20 रुपए इसका शुल्क मानकर सहयोग करें। यह एच्छिक है।

धन्यवाद

आगे भी आप सबका सहयोग रहा, तो हम सब मिलकर इस पत्रिका को एक ऐसी ऊंचाई देने में सफलता प्राप्त करेंगे कि लोग हर महीने इस पत्रिका का बेसब्री से इंतजार करेंगे।

ONLINE TRANSFER / UPI

STATE BANK OF INDIA
Anil Kumar Jaiswal
S/A no- 20155811729
Ifsc code SBIN0005943
Mobile number associated with account 9810556533

FOR PAYTM
Mobile number **7982014609**
ANIL JAISWAL

संपादक : अनिल जायसवाल
9810556533, 7982014609
email : **payasmagazine@gmail.com**

ऑनलाइन डिजिटल मासिक बाल पत्रिका

पायस

◆ जो बच्चे अपनी कल्पना के पंख फैलाकर जैसे भी उड़ना चाहेंगे, हम उन्हें पायस में आकाश उपलब्ध करवाएंगे। रचनाकारों के साथ-साथ बच्चों की लिखी कहानी, कविता के साथ अन्य सभी विधाओं को यहां स्थान मिलेगा। आपसे आग्रह है कि अपने आसपास के बच्चों को इसका लाभ उठाने के लिए प्रेरित करें। इसकी पीडीएफ कापी अपने लोगों में शेयर करें।

◆ यह पत्रिका निशुल्क है। पर जो किसी भी रूप में सहायता करना चाहें, पत्रिका को चलाने के लिए आर्थिक सहयोग प्रदान करना चाहें, उनका स्वागत है।

◆ **रचनाकारों से :** प्रकाशन हेतु भेजी जाने वाली रचना अवश्य टाइप की हुई हो। हस्तलिखित अथवा स्कैन करके भेजी गई सामग्री स्वीकार नहीं कर पाएंगे। रचना पीडीएफ में न भेजकर, वर्ड फाइल में भेजें। अभी यह एकल प्रयास है, अतः टाइप करवाना संभव नही है।

◆ **बाल पाठकों से :** प्रकाशन हेतु भेजी जाने वाली रचना अवश्य टाइप की हुई हो। हस्तलिखित अथवा स्कैन करके भेजी गई सामग्री स्वीकार नहीं कर पाएंगे। रचना पीडीएफ में न भेजकर, वर्ड फाइल में भेजें। जो भी चित्र भेजें, उसे बढ़िया से स्कैन करके भेजें। अगर चित्र साफ नहीं होंगे, तो उनका उपयोग नहीं हो पाएगा। हर रचना या पेंटिंग के साथ अपना क्लोजअप फोटो, उम्र, कक्षा, स्कूल का नाम व मोबाइल नंबर लिखकर भेजना न भूलें।

बातचीत व जानकारी के लिए : whatsapp no : 7982014609
रचना भेजने के लिए : email : **payasmagazine@gmail.com**

◆ आपका सहयोग किसी भी रूप में हो सकता है। बाल पत्रिका को संबल प्रदान करने के लिए आप सादर आमंत्रित हैं--

✦ संरक्षक बनकर ✦ मासिक अनुदान देकर ✦ यथासंभव एकमुश्त सहायता देकर
✦ विज्ञापन देकर ✦ हर महीने छपने वाले लेखकों या चित्रकारों के भुगतान की जिम्मेदारी उठाकर ✦ किसी और रूप में, जो आपको उचित लगे।

◆ अनुदान के लिए प्रयोग करें--

ONLINE TRANSFER / UPI

STATE BANK OF INDIA
Anil Kumar Jaiswal
S/A no- 20155811729
Ifsc code SBIN0005943
Mobile number associated with account 9810556533

FOR PAYTM
Mobile number **7982014609**
ANIL JAISWAL

अनिल जायसवाल
9810556533, 7982014609
email : **payasmagazine@gmail.com**